

भाण्डारण भारती

अंक-57



केन्द्रीय भाण्डारण निगम



मधुर मधुर मेरे दीपक जल

मधुर मधुर मेरे दीपक जल
युग युग प्रतिदिन प्रतिपल प्रतिक्षण
प्रियतम का पथ आलोकित कर,

इस कविता में अपने मन के दीपक को जला कर दूसरों को राह दिखाने की प्रेरणा दी गयी है। मन का दीपक मधुर होकर यदि हर घड़ी, हर दिन करके युगों तक जले तो हर किसी के रास्ते को प्रकाशित कर सकता है, जलने की प्रक्रिया में दीपक अपनी कुर्बानी देता है और पूरे संसार को रौशन करता है। इस शहादत में भी कवयित्री ने दीपक को अपनी मधुरता कायम रखने की प्रेरणा दी है।

सौरभ फैला विपुल धुप बन
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन
दे प्रकाश का सिन्धु अपरिमित
तेरे जीवन का अणु गल गल
पुलक पुलक मेरे दीपक जल,

दीपक को खुश होकर ऐसे जलना चाहिए जिससे उसका एक-एक अणु गलकर उसके मुलायम शरीर को विलुप्त कर दे। इसमें अनंत रौशनी वैसे ही निकलनी चाहिए जैसे सूरज पूरे संसार में सवेरा लाता है। अँधेरा कई तरह का हो सकता है, अज्ञान का अँधेरा उन्हीं में से एक है और उसे दूर करने के लिए बहुत शक्तिशाली दीपक की जरूरत है।

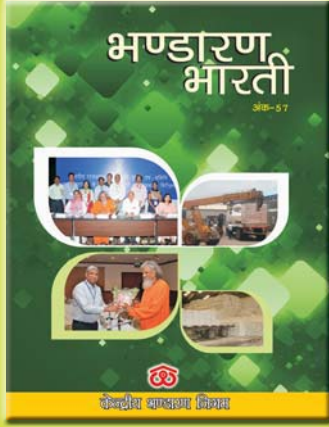
सारे शीतल कोमल नूतन
मांग रहे तुमसे ज्वाला कण
विश्व शलभ सर धुन कहता, “मैं
हाय न जल पाया तुझमें मिल”
सिहर सिहर मेरे दीपक जल,

जब दिए की लौ कांपते हुए जले तो इतना प्रभाव पड़ना चाहिए की सभी कोमल और शीतल चीजें उससे ज्वाला की इच्छा रखें। यहाँ पर ज्वाला का मतलब उस असीमित ऊर्जा से है जो आपको कुछ भी कर गुजरने की शक्ति दे सके। जब पतंगों को कांपती लौ से टकराने का मौका न मिले तो वे भी हताशा में सर धुनने लगे।

जलते नभ में देख असंख्यक
स्नेहहीन नित कितने दीपक
जलमय सागर का उर जलता
विद्युत ले घिरता है बादल
विहंस विहंस मेरे दीपक जल,

आकाश में जितने तारे हैं, वो स्नेहहीन हैं क्योंकि उनके पास अपनी रौशनी तो है पर वो दुनिया को रौशन नहीं कर पाते हैं, जबकि जल से भरे सागर का हृदय भी जलकर बादल बनाता है जिससे पूरी दुनिया को राहत देने वाला जल बरसता है। दीपक को ऐसे ही अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों की भलाई के लिए जलना चाहिए।

— महादेवी वर्मा



अप्रैल-जून - 2015

मुख्य संरक्षक

हरप्रीत सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक

जे.एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता

अनिल कुमार शर्मा
महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक

नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक

रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक

प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग

संतोष शर्मा, नीलम खुराना,
शशि बाला, विजयपाल सिंह

केंद्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस

डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका

अंक-57

विषय	पृष्ठ संख्या
✦ प्रबंध निदेशक की कलम से...	03
✦ संपादकीय	04
आलेख	
○ कॉकरोच : जीवन चक्र एवं नियंत्रण -शेर जगजीत सिंह	05
○ श्रम कानूनों का अनुपालन -आर.पी. शर्मा	07
○ वैज्ञानिक भंडारण के क्षेत्र में निगम के बढ़ते चरण -नम्रता बजाज	12
○ व्यक्तित्व विकास में सहायक : सकारात्मक विचार -महिमानन्द भट्ट	20
कविताएं	
✦ योग -सच्चिदानन्द राय	11
✦ सहेज लो धरती को -विनीत निगम	11
✦ नया नजरिया -एस. नारायण	23
✦ भगवान का सहारा -नीलम खुराना	23
✦ आयेगा लौट कर फिर वो सूरज -स्नेहा मिश्रा	30
✦ तनाव मुक्त जीवन -देवराज सिंह	30
✦ अन्तरात्मा की आवाज़ -दिव्य खत्री	35
✦ माँ की ममता -धर्मेन्द्र पचौरी	35
साहित्यिकी	
✦ अनमोल भेंट (कहानी)	08
अध्यात्म	
➔ सत्य की ओर -पंचम सिंह गुसाईं	16
स्वास्थ्य	
✦ वर्षा ऋतु में ध्यान देने योग्य बातें -शशि बाला	29
विविध	
▲ नारी का बदलता स्वरूप -रेखा दुबे	15
▲ हे मानसून (व्यंग्य) -अरविन्द मिश्र	19
▲ भारत अध्यात्म एवं विज्ञान की जन्मभूमि -कृष्ण कुमार	24
▲ नारी तेरे रूप अनेक -मीनाक्षी गंभीर	26
अन्य गतिविधियां	
✦ सचित्र समाचार	31
✦ सचित्र गतिविधियां	33
✦ खेल समाचार	36
✦ निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	37
✦ सेवानिवृत्ति के अवसर पर...	38

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- ❑ वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- ❑ भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- ❑ पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- ❑ बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- ❑ पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्थ चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- ❑ भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ❑ ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।



प्रबंध निदेशक की कलम से...

यह प्रसन्नता का विषय है कि त्रैमासिक पत्रिका 'भंडारण भारती' के माध्यम से मुझे आपसे संपर्क स्थापित करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। जैसा कि आप जानते हैं कि इस पत्रिका का उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निगम के कार्यकलापों से अवगत कराना तथा लेखन के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान करना है। इस प्रकार के दृष्टिकोण से पारदर्शिता बनी रहती है और संगठन के प्रति अपनत्व की भावना भी उत्पन्न होती है।

निगम उद्योग, व्यापार, कृषि एवं अन्य क्षेत्रों की भंडारण एवं लॉजिस्टिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमें वैज्ञानिक भंडारण के कारोबार में तेजी से बदलती आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भंडारण क्षमता का शत-प्रतिशत उपयोग सुनिश्चित कर महत्वपूर्ण ग्राहकों से बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए सदैव प्रयास करना चाहिए।

समय की मांग है कि निगम को अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए मानव संसाधन का समुचित प्रयोग करना होगा जिससे हम बिना किसी रुकावट के अपने सभी कार्यों को सफलतापूर्वक कर सकें। निगम भंडारण के साथ-साथ निगमित सामाजिक दायित्व एवं प्रशिक्षण जैसे कार्यों से भी जुड़ा हुआ है। निगम द्वारा कई वर्षों से किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की जानकारी हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रदान की जाती है जो एक सराहनीय प्रयास है।

निगम अपनी मुख्य गतिविधि वैज्ञानिक भंडारण के साथ राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग संवैधानिक दायित्वों के अनुरूप करने के लिए वचनबद्ध है। आज के दौर में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भले ही कितना भी चलन में क्यों न हो परन्तु वह हिन्दी या अन्य किसी भारतीय भाषा का स्थान नहीं ले सकती। मेरा आप सभी से आग्रह है कि इस दिशा में आगे बढ़ते हुए कार्यालय कार्य में हिन्दी के सरल और आम बोलचाल के शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग करें तथा सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में कम्प्यूटर के माध्यम से हिन्दी में कार्य करने की सोच को विकसित करें ताकि हम अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ सकें। संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा राजभाषा हिन्दी की प्रगति का जायजा लेने के उद्देश्य से दिनांक 09.04.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद एवं दिनांक 24.06.2015 को सैन्ट्रल वेअरहाउस, चिकलथाना (औरंगाबाद) का राजभाषा निरीक्षण किया गया। माननीय सदस्यों ने इन कार्यालयों में किए जा रहे राजभाषा कार्यों की प्रशंसा करते हुए भविष्य में राजभाषा के कार्य में और गति लाने के सुझाव भी दिए। मेरा आग्रह है कि आप सभी समिति की अपेक्षाओं के अनुसार राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में कार्य करें।

मुझे विश्वास है कि आप सभी कर्तव्य निष्ठ भावना के साथ निगम को सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे। इस दिशा में हम सभी को एकजुट हो कर पूर्ण समर्पण के साथ सक्रिय भूमिका अदा करनी होगी तथा दृढ़ संकल्प के साथ अपने कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए सदैव तत्पर रहना होगा।

1/2 1/2 1/2
ççàk funs kcl

संपादकीय



त्रैमासिक पत्रिका भंडारण भारती का नया अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। आप सभी पाठकों के सुझावों के अनुरूप इस अंक को भी हमने पूर्ण साज-सज्जा के साथ प्रकाशित करने का प्रयास किया है। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए हमने एक नई शृंखला 'साहित्यिकी' भी शुरू की है, जिसके अंतर्गत किसी एक साहित्यकार की रचना प्रकाशित की जाएगी। इस अंक में हमने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की श्रेष्ठ कहानियों में से एक कहानी प्रकाशित की है। आशा है सभी पाठकों को हमारा यह प्रयास उपयोगी लगेगा।

निगम की मुख्य गतिविधि वैज्ञानिक भंडारण, पैस्ट कंट्रोल सहित श्रम कानून, व्यक्तित्व विकास जैसे विषयों को शामिल करते हुए पत्रिका में विभिन्न स्थाई स्तंभों जैसे- कविता, अध्यात्म, स्वास्थ्य एवं अन्य विविध विषयों को प्रमुखता से समेकित किया गया है।

तिमाही के दौरान निगम की विभिन्न गतिविधियों की झलक फोटोग्राफ के माध्यम से दर्शाई गई है। इसके साथ ही संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण से संबंधित झलकियाँ तथा विभिन्न खेल गतिविधियों सहित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन संबंधी फोटोग्राफ भी इस पत्रिका में प्रकाशित किए गए हैं।

राजभाषा अनुभाग निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से इस पत्रिका का स्तर निरंतर बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प है, जिसके लिए भविष्य में भी आप सभी पाठकों का मार्गदर्शन अपेक्षित है ताकि पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल हो सके।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

कॉकरोच : जीवन चक्र एवं नियंत्रण

*शेर जगजीत सिंह

हम जिस परिवेश में रहते हैं, उसे समाज कहते हैं। यह समाज घरों के समूह में रहने वाले लोगों से बनता है। हमारे इन घरों में या कहीं भी रहने वाले लोग और कार्य स्थलों में कार्य करने वाले लोगों के साथ एक समूह और भी रहता है, वह है— पैस्ट यानि कीट समूह। इनका नाम लेते ही हमारे सामने मच्छर, मक्खी, कॉकरोच, चींटी, चूहा व दीमक आते हैं। यह वो पैस्ट हैं जो आमतौर पर घरों, पार्कों, फैक्ट्रियों, ऑफिस इत्यादि में



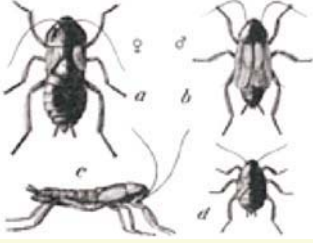



होते हैं, जिससे आज हर व्यक्ति परेशान है और इन हानिकारक कीट जंतुओं से होने वाली बीमारियों से निजात पाना चाहता है।

आज हम आपको कॉकरोच और उसकी रोकथाम के लिए तकनीकी तथ्यों से अवगत कराना चाहेंगे।

कॉकरोच छः पांव वाला ऐसा कीट है जो बैलटाओडीआ आर्डर में आता है, इनकी कुल 4600 किस्में होती हैं, जिसमें से करीब 30 किस्म के कॉकरोच इंसानों के आसपास के वातावरण में रहते हैं, जिसमें 4 किस्म के कॉकरोच ज्यादा देखने में आते हैं। यह इस प्रकार हैं—

इनके शरीर पर छोटे-छोटे छिद्र होते हैं जिससे यह सांस लेते हैं। इनकी कमपाउंड आंखें होती हैं जिससे यह अंधेरे में भी देख सकते हैं। इनके मुंह पर लम्बे-लम्बे दो एंटीना होते हैं जो आधा किलोमीटर तक की दूरी से खाद्य पदार्थों को सूंघने की शक्ति रखते हैं।

1.	जर्मन कॉकरोच	15 मिली मीटर की लम्बाई वाला होता है।	
2.	एशियन कॉकरोच	15 मिली मीटर की लम्बाई वाला होता है।	
3.	ओरियंटल कॉकरोच	25 मिली मीटर की लम्बाई वाला होता है। (ए) फीमेल (बी) मेल (सी) फीमेल का साइड व्यू (डी) यंग मेल	
4.	अमेरिकन कॉकरोच	35 मिली मीटर की लम्बाई वाला होता है।	

LoHko

बाल्टिक एंबर में 40 से 50 मिलियन वर्ष पुराने कॉकरोच



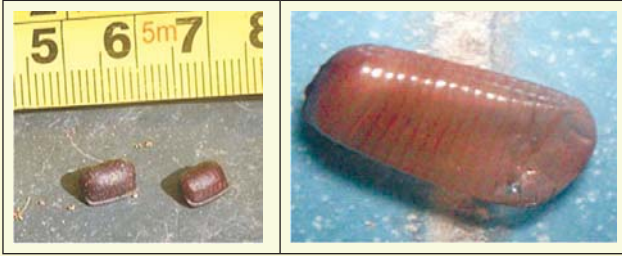
ये सदियों पुराने कीट हैं और इसके फौसिल चार से पांच करोड़ वर्ष पुराने पाए गये हैं। यह अक्सर रात को निकलने वाले कीट हैं और रोशनी से दूर भागते हैं, लेकिन एशियन कॉकरोच रोशनी की तरफ भागते हैं। ज्यादातर कॉकरोच गरम वातावरण को पंसद करते हैं।

कॉकरोच अपने खाने के स्रोत ढूंढते समय सामूहिक तौर पर निर्णय लेते हैं और समूह बनाकर रहते हैं।

* उपमहाप्रबंधक (पीसीएस), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

it uu mRi fr

mffkdk



मादा कॉकरोच 30 से 40 अंडे देती है और यह अंडे एक पैकेट में एक-दूसरे के साथ रखे होते हैं, इस पैकेट को उथिका के नाम से जाना जाता है। मादा कॉकरोच वर्षा ऋतु में अंडे देती है। एक साल में एक मादा 7-8 उथिका पैदा करती है जिससे 300-400 कॉकरोच निकलते हैं। अंडे से एडल्ट कॉकरोच 3-4 महीने में बढ़े हो जाते हैं।

ft nk jgus dh 'kDr

हवा के बिना 45 मिनट तक रह जाते हैं। एक महीना बिना भोजन के रह सकते हैं। [-]5 डिग्री और [-]8 डिग्री तक के तापमान में भी जिंदा रहते हैं। न्यूकलियर युद्ध हो जाए तो भी यह जिंदा रहेंगे क्योंकि इनमें इंसान से 15 गुणा ज्यादा रेडिएशन सहन करने की शक्ति होती है।

यह रोजमर्रा की जिंदगी में दिखने वाला कीट है। यह बचे हुए भोजन को खाते हैं और उसमें दुर्गंध छोड़ते हैं। यह अपने शरीर पर कई किस्म के बैक्टीरिया पालते हैं जो इंसानों के लिए हानिकारक हैं, खासकर अस्पतालों में। यह इंसानों में एलर्जी फैलाते हैं क्योंकि ये ट्रॉपोमाइसिन नामक एक प्रोटीन छोड़ते हैं जो एलर्जी का कारण बनता है। यह एलर्जी बहुत बार अस्थमा में परिवर्तित हो जाती है।

dkkjkp dks dVky djus ds mi k

सामान्य उपाय – यह घरों में उत्पन्न न हों, इसे सुनिश्चित करने के लिए यह जरूरी है कि खाद्य पदार्थों को अच्छी तरह ढक कर सीलड डिब्बों में रखें।

खाना बनाते समय व बाद में शैल्फ व गैस चूल्हे के आसपास हर समय सफाई रखें।

बर्तन धोने वाले सिंक में बचा हुआ भोजन न छोड़ें और ध्यान रखें कि पानी के नलों से पानी न टपके।

रसोई के सिंक व बाथरूम के ड्रेनेज फ्लोर ट्रेप पर एंटी-कॉकरोच जाली का प्रयोग अवश्य करें ताकि रात को कॉकरोच अंदर ना आने पाए।

dkkjkp dks dVky djus ds j l k fud rj hds

○ I kM; e ckdjckuV % यानि कि बेकिंग सोडा कॉकरोच को मारने की क्षमता रखता है। आप आटे व बेकिंग सोडा को 98:2 के अनुपात में लेकर छोटी छोटी गोली बना कर रसोई सिंक व बाथरूम के ड्रेनेज फ्लोर ट्रेप पर जाली के पास रखें। रसोई की शैल्फों के कोनों के पास रखें या जहां इनकी मात्रा अधिक पायी जाती है।

○ t Sy dk bLreky % आजकल जैल कॉकरोच कंट्रोल के लिए एक बहुत सरल व कारगर उपाय है। यह फिपरोनिल नामक रसायन एक ट्यूब में मिलता है जो जैल के रूप में होता है। इस जैल को आप संक्रमित जगहों पर छोटे-छोटे बिंदुओं की तरह लगा सकते हैं।

t Sy ds Qk ns %

1. जैल एक आकर्षित रसायन है जो कॉकरोच को अपनी ओर आकर्षित करता है।
2. कम मात्रा में ज्यादा प्रभावकारी है।
3. यह गंधहीन रसायन है, जहां आप प्रयोग में ला रहे हैं वहां किसी भी प्रकार की गंध नहीं फैलती।
4. इसका प्रभाव 6 महीने तक रहता है।

- विज्ञान और वैज्ञानिक कार्यों में सफलता असीमित या बड़े संसाधनों का प्रावधान करने से नहीं मिलती, बल्कि यह समस्याओं और उद्देश्यों को बुद्धिमानी और सतर्कता से चुनने से मिलती है और सबसे बढ़कर जो चीज़ चाहिए वो है निरंतर कठोर परिश्रम एवं समर्पण की।
- हम सिर्फ अपने लिए ही नहीं बल्कि समस्त विश्व के लिए शांति और शांतिपूर्ण विकास में विश्वास रखते हैं।

-लाल बहादुर शाहरी

श्रम कानूनों का अनुपालन-केंद्रीय भंडारण निगम के परिपेक्ष्य में

*आर.पी. शर्मा



केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा खाद्यान्न एवं अन्य वस्तुओं के वैज्ञानिक भंडारण के साथ-साथ जमाकर्ताओं की सुविधा हेतु उनकी ओर से भंडारण के समय वस्तुओं की हैंडलिंग एवं

ट्रांसपोर्टेशन का कार्य एवं निगम की अन्य गतिविधियों के निष्पादन व संचालन के लिए श्रमिकों व अन्य कामगारों को ठेकेदारों के माध्यम से लगाया जाता है।

किसी ठेकेदार की नियुक्ति की प्रक्रिया करते समय यह आवश्यक है कि निगम द्वारा प्रमुख नियोक्ता का रजिस्ट्रेशन कराया गया हो। इसके अतिरिक्त ठेकेदार द्वारा सक्षम श्रम कार्यालय से लेबर लाइसेंस लिया जाना आवश्यक है।

ठेकेदारों से यह अपेक्षा कि जाती है कि वे श्रम कानूनों का पालन करते हुए श्रमिकों/कामगारों को न्यूनतम मजदूरी का भुगतान करें, साथ ही अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध कराएँ। पीएफ एवं ईएसआई की राशि संबंधित विभाग में जमा कराएँ व मजदूरों को आई कार्ड बनवाकर दें।

विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए ठेकेदारों के द्वारा लगाये गए श्रमिकों व कामगारों को समय-समय पर प्रचलित श्रम कानूनों के अनुसार मजदूरी/वेतन दिया जाना आवश्यक है। साथ ही उन्हें सभी सुविधाएँ मुहैया करानी चाहिए जो प्रचलित श्रम संबंधी कानूनों के अनुसार देय हैं, जैसे पीने के लिए स्वच्छ जल, कपड़े धोने की सहूलियत, शौचालय, आरामगृह, कैटीन की सुविधा एवं प्राथमिक उपचार इत्यादि।

ठेकेदारों द्वारा ऐसा न करने की दशा में प्रमुख नियोक्ता के नाते निगम का कर्तव्य हो जाता है कि वह कामगारों/श्रमिकों के भुगतान संबंधी एवं अन्य सुविधाओं को उपलब्ध करवाएँ।

* प्रबंधक, (आईआर), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

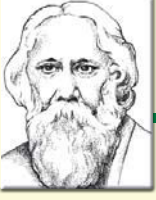
जिस कार्यालय/केंद्र में निगम के कार्य हेतु अथवा जमाकर्ता की ओर से कार्य के लिए ठेकेदार द्वारा मजदूर/कामगार नियुक्त किए जाएं, उस विभाग में तैनात अधिकृत अधिकारी को निम्न छोटी-छोटी परंतु अति महत्वपूर्ण बातों को हमेशा सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है जिससे भविष्य में संभावित किसी भी औद्योगिक विवाद से बचा जा सके, साथ ही कार्य का निष्पादन सुचारु रूप से चलता रहे।

1. कामगारों/श्रमिकों के कार्य का सुपरविजन सीधे तौर पर नहीं किया जाना चाहिए अपितु ठेकेदार को निर्देश दिये जाने चाहिए। कार्य की गुणवत्ता सुपरवाइज की जा सकती है।
2. कामगारों/श्रमिकों की छुट्टियाँ/अग्रिम भुगतान सीधे तौर पर नियोक्ता द्वारा नहीं किया जाना चाहिए।
3. श्रमिक संबंधी सभी रजिस्टर व अन्य दस्तावेज ठेकेदार द्वारा बनाए जाने चाहिए।
4. ठेकेदार द्वारा निर्धारित दिवस/समय पर वेतन का भुगतान सुनिश्चित करें।
5. श्रम संबंधी अन्य कानूनों का भी ठेकेदार द्वारा अनुपालन टेंडर की शर्तों के अनुसार किया जाना सुनिश्चित करें।

यदि निगम के प्रतिनिधि द्वारा उपरोक्त बातों को अमल में लाया जाता है तो श्रम विवादों से बचा जा सकता है। उपरोक्त बिंदुओं को ध्यान में न रखने के कारण विभिन्न केंद्रों पर श्रमिकों द्वारा हाल ही में श्रम संबंधी विवाद उत्पन्न किए गए हैं, जिससे निगम को अपने मूलभूत उद्देश्य से हट कर इनके निपटान में अतिरिक्त/अपरिहार्य श्रम करना पड़ रहा है।

इस लेख का उद्देश्य श्रम कानूनों की व्याख्या कराना नहीं है परंतु कतिपय महत्वपूर्ण बातों की जानकारी उपलब्ध कराना मात्र है, जिससे निगम के हित को सुरक्षित किया जा सके।





अनमोल भेंट

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को कलकत्ता में हुआ था। आप एक बांग्ला कवि, कहानीकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबंधकार और चित्रकार थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर की बाल्यकाल से कविताएं और कहानियाँ लिखने में रूचि थी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की सबसे लोकप्रिय रचना 'गीतांजलि' रही जिसके लिए 1913 में उन्हें नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। आप विश्व के एकमात्र ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी दो रचनाएं दो देशों का राष्ट्रगान बनीं। भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' गुरुदेव की ही रचनाएं हैं। रवीन्द्रनाथ की रचनाओं में स्वतंत्रता आंदोलन और उस समय के समाज की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। रवीन्द्रनाथ की कहानियों में काबुलीवाला, मास्टर साहब और पोस्टमास्टर आदि लोकप्रिय कहानियाँ हैं। इनकी श्रेष्ठ कहानियों में से एक कहानी प्रस्तुत की जा रही है।

रायचरण बारह वर्ष की आयु से अपने मालिक का बच्चा खिलाने पर नौकर हुआ था। उसके पश्चात काफी समय बीत गया। नन्हा बच्चा रायचरण की गोद से निकल कर स्कूल में प्रविष्ट हुआ, स्कूल से कॉलेज में पहुँचा, फिर एक सरकारी स्थान पर लग गया। किन्तु रायचरण अब भी बच्चा खिलता था, वह बच्चा उसकी गोद के पाले हुए अनुकूल बाबू का पुत्र था।

बच्चा घुटनों के बल चलकर बाहर निकल जाता। जब रायचरण दौड़ कर उसको पकड़ता तो वह रोता और अपने नन्हें-नन्हें हाथों से रायचरण को मारता।

रायचरण हंस कर कहता— "हमारा भैया भी बड़ा होकर जज साहब बनेगा।" जब वह रायचरण को चन्ना कहकर पुकारता तो उसका हृदय बहुत हर्षित होता। वह दोनों हाथ पृथ्वी पर टेक कर घोड़ा बनता और बच्चा उसकी पीठ पर सवार हो जाता।

इन्हीं दिनों अनुकूल बाबू की बदली पद्या नदी के किनारे एक जिले में हो गई। नये स्थान की ओर जाते हुए कलकत्ता से उन्होंने अपने बच्चे के लिए मूल्यवान आभूषण और कपड़ों के अतिरिक्त एक छोटी-सी सुन्दर गाड़ी भी खरीदी।

वर्षा ऋतु थी। कई दिनों से मूसलाधार वर्षा हो रही थी। ईश्वर-ईश्वर करते हुए बादल फटे। संध्या का समय था। बच्चे ने बाहर जाने के लिए आग्रह किया। रायचरण उसे गाड़ी में बिठा कर बाहर ले गया। खेतों में पानी खूब भरा हुआ था। बच्चे ने फूलों का गुच्छा देखकर जिद की, रायचरण ने उसे बहलाना चाहा किन्तु वह न माना। विवश रायचरण बच्चे का मन रखने के

लिए घुटनों-घुटनों पानी में फूल तोड़ने लगा। कई स्थानों पर उसके पांव कीचड़ में बुरी तरह धंस गये। बच्चा तनिक देर मौन गाड़ी में बैठा रहा, फिर उसका ध्यान लहराती हुई नदी की ओर गया। वह चुपके-से गाड़ी से उतरा। पास ही एक लकड़ी पड़ी थी, उठा ली और भयानक नदी के तट पर पहुँच कर उसकी लहरों से खेलने लगा। नदी के शोर में ऐसा मालूम होता था कि नदी की चंचल और मुंह जोर जलपरियां सुन्दर बच्चे को अपने साथ खेलने के लिए बुला रही हैं।

रायचरण फूल ले कर वापस आया तो देखा गाड़ी खाली है। उसने इधर-उधर देखा, मानो पैरों के नीचे से धरती खिसक गई। पागलों की भाँति चहुँओर देखने लगा था, बार-बार बच्चे का नाम लेकर पुकारता था लेकिन उत्तर में 'चन्ना' की मधुर ध्वनि नहीं आती थी।

चारों ओर अंधेरा छा गया। बच्चे की माता को चिन्ता होने लगी। उसने चारों ओर आदमी दौड़ाये। कुछ व्यक्ति लालटेन लिये हुए नदी के किनारे खोजने के लिए पहुँचे। रायचरण उन्हें देखकर उनके चरणों में गिर पड़ा। उन्होंने उससे प्रश्न करने आरम्भ किये किन्तु वह प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में यही कहता— "मुझे कुछ मालूम नहीं।"

यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति की यह सम्मति थी कि छोटे बच्चे को पद्या नदी ने अपने आंचल में छिपा लिया है किन्तु फिर भी हृदय में विभिन्न प्रकार की शंकायें उत्पन्न हो रही थीं। एक यह कि उसी संध्या को निर्वासितों का एक समूह नगर से गया था और मां को

संदेह था कि रायचरण ने कहीं बच्चे को निर्वासितों के हाथों न बेच दिया हो। वह रायचरण को अलग ले गई और उससे विनती करते हुए कहने लगी— “रायचरण, तुम मुझसे जितना रुपया चाहो ले लो, किन्तु परमात्मा के लिए मेरी दशा पर तरस खाकर मेरा बच्चा मुझको वापस कर दो।”

परन्तु रायचरण कुछ उत्तर न दे सका, केवल माथे पर हाथ मारकर मौन हो गया।

स्वामिनी ने क्रोध और आवेश की दशा में उसको घर से बाहर निकाल दिया। अनुकूल बाबू ने पत्नी को बहुत समझाया किन्तु माता के हृदय से शंकाएं दूर न हुईं। वह बराबर यही कहती रही कि— “मेरा बच्चा सोने के आभूषण पहने हुए था अवश्य इसने....”

रायचरण अपने गांव वापस चला आया। उसके कोई सन्तान न थी और न ही सन्तान होने की कोई सम्भावना थी। किन्तु साल की समाप्ति पर उसके घर पुत्र ने जन्म लिया; परन्तु पत्नी सूतिका-गृह में ही मर गई। घर में एक विधवा बहन थी उसने बच्चे के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लिया।

जब बच्चा घुटनों के बल चलने लगा, वह घर वालों की नजर बचा कर बाहर निकल जाता। रामचरण जब उसे दौड़कर पकड़ता तो वह चंचलता से उसको मारता। उस समय रायचरण के नेत्रों के सामने अपने उस नन्हें मालिक की सूरत फिर जाती जो पद्या नदी की लहरों में लुप्त हो गया था।

बच्चे की जबान खुली तो वह बाप को ‘बाबा’ और बुआ को ‘मामा’ इस तरह से कहता था जिस ढंग से रायचरण का नन्हा मालिक बोलता था। रायचरण उसकी आवाज से चौंक उठता। उसे पूर्ण विश्वास था कि उसके मालिक ने उसके घर में जन्म लिया है।

इस विचार को निर्धारित करने के लिए उसके पास तीन प्रमाण थे। एक तो यह कि वह नन्हें मालिक की मृत्यु के थोड़े ही समय पश्चात् उत्पन्न हुआ। दूसरे यह कि उसकी पत्नी वृद्ध हो गई थी और सन्तान उत्पत्ति की कोई आशा न थी। तीसरे यह कि बच्चे के बोलने का ढंग और उसकी सम्पूर्ण भाव-भंगिमाएं नन्हें मालिक से मिलती-जुलती थीं।

वह हर समय बच्चे की देख-भाल में संलग्न रहता। उसे भय था कि उसका नन्हा मालिक फिर कहीं गायब न हो जाए। वह बच्चे के लिए एक गाड़ी लाया और अपनी पत्नी के आभूषण बेचकर बच्चे के लिए आभूषण बनवा दिये। वह उसे गाड़ी में बिठाकर प्रतिदिन वायु-सेवन के लिए बाहर ले जाता था।



धीरे-धीरे दिन बीतते गये और बच्चा सयाना हो गया। परन्तु इस लाड़-चाव में वह बहुत बिगड़ गया था। किसी से सीधे मुंह बात न करता। गांव के लड़के उसे लाट साहब कहकर छेड़ते।

जब लड़का शिक्षा योग्य हुआ तो रायचरण अपनी छोटी-सी जमीन बेचकर कलकत्ता आ गया। उसने दौड़-धूप करके नौकरी खोजी और फलन को स्कूल में दाखिला करवा दिया। उसको पूर्ण विश्वास था कि बड़ा होकर फलन अवश्य जज बनेगा।

होते-होते अब फलन की आयु बारह वर्ष की हो गई। अब वह खूब लिख-पढ़ सकता था। उसका स्वास्थ्य अच्छा और सूरत-शकल भी अच्छी थी। उसको बनाव-श्रृंगार की भी बड़ी चिन्ता रहती थी। जब देखों दर्पण हाथ में लिये बाल बनाता रहा है।

वह अपव्ययी भी बहुत था। पिता की सारी आय व्यर्थ की विलास-सामग्री में व्यय कर देता। रायचरण उससे प्रेम तो पिता की भांति करता था, किन्तु प्रायः उसका बर्ताव उस लड़के से ऐसा ही था जैसे मालिक के साथ नौकर का होता है। उसका फलन भी उसे पिता न समझता था। दूसरी बात यह थी कि रायचरण स्वयं को फलन का पिता प्रकट भी न करता था।

छात्रसाल के विद्यार्थी रायचरण के गंवारपन का उपहास करते और फलन भी उन्हीं के साथ सम्मिलित हो जाता।

रायचरण ने जमीन बेचकर जो कुछ रुपया प्राप्त किया था वह अब लगभग सारा समाप्त हो चुका था।



उसका साधारण वेतन फलन के खर्चों के लिए कम था। वह प्रायः अपने पिता से जेब-खर्च और विलास की सामग्री तथा अच्छे-अच्छे वस्त्रों के लिए झगड़ता रहता था।

आखिर एक युक्ति रायचरण के मस्तिष्क में आई। उसने नौकरी छोड़ दी और उसके पास जो कुछ शेष रुपया था फलन को सौंप कर बोला— “फलन, मैं एक आवश्यक कार्य से गांव जा रहा हूँ, बहुत जल्द वापस आ जाऊंगा। तुम किसी बात से घबराना नहीं।”

रायचरण सीधा उस स्थान पर पहुँचा जहाँ अनुकूल बाबू जज के ओहदे पर लगे हुए थे। उनकी और कोई दूसरी संतान न थी। इस कारण उनकी पत्नी हर समय चिन्तित रहती थी।

अनुकूल बाबू कचहरी से वापस आकर कुर्सी पर बैठे हुए थे और उनकी पत्नी सन्तानोत्पत्ति के लिए बाजारू दवा बेचने वाले से जड़ी-बूटीयां खरीद रही थी।

काफी दिनों के पश्चात् वह अपने वृद्ध नौकर रायचरण को देखकर आश्चर्य चकित हुई, पुरानी सेवाओं का विचार करके उसको रायचरण पर तरस आ गया और उसे पूछा— “क्या तुम फिर नौकरी करना चाहते हो।”

रायचरण ने मुस्करा कर उत्तर दिया— “मैं अपनी मालकिन के चरण छूना चाहता हूँ।”

अनुकूल बाबू रायचरण की आवाज सुनकर कमरे से निकल आये। रायचरण की शकल देखकर उनके कलेजे का जख्म ताजा हो गया और उन्होंने मुख फेर लिया।

रायचरण ने अनुकूल बाबू को संबोधित करके कहा— “सरकार, आपके बच्चे को पट्टा ने नहीं, बल्कि मैंने चुराया था।”

अनुकूल बाबू ने आश्चर्य से कहा— “तुम यह क्या कह रहे हो, क्या मेरा बच्चा वास्तव में जिन्दा है?”

उसकी पत्नी ने उछलकर कहा— “भगवान् के लिए बताओ मेरा बच्चा कहाँ है?”

रायचरण ने कहा— “आप सन्तोष रखें, आपका बच्चा इस समय भी मेरे पास है।”

अनुकूल बाबू की पत्नी ने रायचरण से अत्यधिक विनती करते हुए कहा— “मुझे बताओ।”

रायचरण ने कहा— “मैं उसे परसों ले आऊंगा।”

रविवार का दिन था। जज साहब अपने मकान में बेचैनी से रायचरण की प्रतीक्षा कर रहे थे। कभी वह कमरे में इधर-उधर टहलने लगते और कभी थोड़े समय के लिए आराम-कुर्सी पर बैठ जाते। आखिर दस बजे के लगभग रायचरण ने फलन का हाथ पकड़े हुए कमरे में प्रवेश किया।

अनुकूल बाबू की घरवाली फलन को देखते ही दीवानों की भांति उसकी ओर लपकी और उसे बड़े जोर से गले लगा लिया। उसके नेत्रों से अश्रुओं का समुद्र उमड़ पड़ा। कभी वह उसको प्यार करती, कभी आश्चर्य से उसकी सूरत ताकने लग जाती। फलन सुन्दर था और उसके कपड़े भी अच्छे थे। अनुकूल बाबू के हृदय में भी पुत्र-प्रेम का आवेश उत्पन्न हुआ, किन्तु जरा-सी देर के बाद उनके पितृ-प्रेम का स्थान कानून भावना ने ले लिया और उन्होंने रायचरण से पूछा— “भला इसका प्रमाण क्या है कि यह बच्चा मेरा है?”

रायचरण ने उत्तर दिया— “इसका उत्तर मैं क्या दूँ सरकार! इस बात का ज्ञान तो परमात्मा के सिवाय और किसी को नहीं हो सकता कि मैंने ही आपका बच्चा चुराया था।”

जब अनुकूल बाबू ने देखा कि उनकी पत्नी फलन को कलेजे से लगाये हुए है तो प्रमाण मांगना व्यर्थ है। इसके अतिरिक्त उन्हें ध्यान आया कि इस गंवार को ऐसा सुन्दर बच्चा कहाँ मिल सकता था और झूठे बोलने से क्या लाभ हो सकता है।

सहसा उन्हें अपने वृद्ध नौकर की बेध्यानी याद आ गई और कानूनी मुद्रा में बोले— “रायचरण, अब तुम यहां नहीं रह सकते।”

रायचरण ने टंडी उसांस भरकर कहा— “सरकार, अब मैं कहाँ जाऊँ। बूढ़ा हो गया हूँ, अब मुझे कोई नौकरी भी न रखेगा। भगवान् के लिए अपने द्वार पर पड़ा रहने दीजिये।”

अनुकूल बाबू की पत्नी बोली— “रहने दो, हमारा क्या नुकसान है? हमारा बच्चा भी इसे देखकर प्रसन्न रहेगा।”

किन्तु अनुकूल बाबू की कानूनी नस भड़की हुई थी। उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया— “नहीं, इसका अपराध बिल्कुल क्षमा नहीं किया जा सकता।”

रायचरण ने अनुकूल बाबू के पांव पकड़ते हुए कहा— “सरकार, मुझे न निकालिए, मैंने आपका बच्चा नहीं चुराया था बल्कि परमात्मा ने चुराया था।”

अनुकूल बाबू को गंवार की इस बात पर और भी क्रोध आ गया। बोले— “नहीं, अब मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकता। तुमने मेरे साथ कृतघ्नता की है।”

रायचरण ने फिर कहा— “सरकार, मेरा कुछ अपराध नहीं।”

अनुकूल बाबू तयोरियों पर बल डालकर कहने लगे— “तो फिर किसका अपराध है?”

रायचरण ने उत्तर दिया— “मेरे भाग्य का।”

परन्तु शिक्षित व्यक्ति भाग्य का अस्तित्व स्वीकार नहीं कर सकता।

फलन को जब मालूम हुआ कि वह वास्तव में एक धनी व्यक्ति का पुत्र है तो उसे भी रायचरण की इस चेष्टा पर क्रोध आया कि उसने इतने दिनों तक क्यों उसे कष्ट में रखा। फिर रायचरण को देखकर उसे दया भी आ गई और उसने अनुकूल बाबू से कहा— “पिताजी, इसको क्षमा कर दीजिए। यदि आप इसको अपने साथ नहीं रखना चाहते तो इसकी थोड़ी पेंशन कर दें।”

इतना सुनने के बाद रायचरण अपने बेटे को अन्तिम बार देखकर अनुकूल बाबू की कोठी से निकल कर चुपचाप कहीं चला गया।

महीना समाप्त होने पर अनुकूल बाबू ने रायचरण के गांव कुछ रुपया भेजा किन्तु मनीऑर्डर वापस आ गया क्योंकि गांव में अब इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं था।



योग

*सच्चिदानन्द राय

योग किये तन रहे निरोगी,
मन न रहेगा सदा ये भोगी।।
मानवता के पथ पर चल कर।
देखेगा नहीं पीछे मुड़कर।।
द्वेष-भाव नहीं रहेगा अंदर।
सबसे होगा प्रेम निरंतर।।
योग से अंतर मन हो जाए।
इससे जीने का ढंग आए।।
तब होता है साक्षात्कार।
मिल जाता जीवन का सार।।
हर व्यक्ति कहता हर-हर ओऽम्।
सारा संसार वसुधैव कुटुंबकम्।।
मजहब बाधा नहीं है बनता।
मानव निःस्वार्थ हो जाता।
21 जून का विश्व योग दिन, सबको याद रहेगा।
गीता का यह मूल मंत्र, मानव कल्याण करेगा।।

* प्रबंधक, के.भ.नि., आईसीडी, पुणे

सहेज लो धरती को

*विनीत निगम

रास्ते अपनी तबाही के खुद निकाले हमने।
कसूर न उनका था, न हमारा था।।
तरक्की के रास्ते पर सभी ने जाना था।
शायद कब्र खोदने का बहाना था।।
हर तरफ धुआँ और गुरबत बटोरी हमने।
बड़े ही प्यार से प्लास्टिक चादर बिछा दी हमने।।
यूरिया, केमिकल और जहर से सजाए बाज़ार।
खुश हुए देखकर बहुत तरक्की कर ली हमने।।
ज़लज़ले, बाढ़, भूकंप यूँ ही नहीं आते हैं।
धरती के सब्र की पैमाइश हैं ये।।
कुदरत कभी-कभी इसी तरह फैंसले सुनाती है।
जब सब ओर बर्बादी और सुनामी लाती है।।
आशा की किरण अभी भी बाकी है।
सब मिलकर सहेज लो अपनी धरती को।।
सिर्फ कहने और चाहने से कुछ होने नहीं वाला।
क्योंकि कर्म के बिना फल मिलने नहीं वाला।।

* पूर्व प्रबंधक, के.भ.नि., क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

वैज्ञानिक भंडारण क्षेत्र में निगम के बढ़ते कदम

*नम्रता बजाज

केन्द्रीय भंडारण निगम का देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान है। वेअरहाउसिंग तथा इससे संबंधित कार्यकलापों के क्षेत्र में निगम अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस निगम का कृषि उत्पाद (विकास और वेअरहाउसिंग) कारपोरेशन अधिनियम, 1956 के अधीन 02 मार्च, 1957 को हुई और जुलाई, 1957 में इसने कार्य करना आरम्भ किया। इस तरह भारत की प्रमुख भण्डारण एजेन्सी केन्द्रीय भण्डारण निगम देश में सार्वजनिक वेअरहाउस चलाने वाली सबसे बड़ी संस्था है जो कृषि क्षेत्र सहित विभिन्न प्रकार के ग्राहकों को भण्डारण के क्षेत्र में लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करती है। निगम आईएसओ-9001:2008 एवं आईएसओ 14001:2004 और ओएचएसएस 18001:2007 प्रमाणन प्राप्त संस्था है जो अनुसूची-क मिनी रत्न श्रेणी-। संगठन है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम के देश में 18 क्षेत्रीय कार्यालय हैं तथा यह विभिन्न स्थानों पर 30 जून, 2015 की स्थिति के अनुसार कुल भण्डारण क्षमता का लगभग 114.94 लाख मी.टन तथा 84 प्रतिशत उपयोगिता के साथ 475 वेअरहाउस चला रहा है जिनमें कृषि उत्पादों से लेकर अत्यन्त परिष्कृत औद्योगिक उत्पादों के लिए भण्डारण सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। निगम की वेअरहाउसिंग गतिविधियों में खाद्यान्न वेअरहाउस, औद्योगिक वेअरहाउस, कस्टम बांडेड वेअरहाउस, कन्टेनर फ्रेट स्टेशन, अन्तर्देशीय क्लीयरेंस डिपो तथा एअर कार्गो कॉम्प्लैक्स शामिल हैं। भण्डारण एवं हैंडलिंग के अलावा निगम क्लीयरिंग एवं फारवर्डिंग, हैंडलिंग एवं ट्रांसपोर्ट, अधिप्राप्ति एवं वितरण, कीटनाशन सेवाएं, प्रधूमन सेवाएं एवं अन्य अनुषंगी सेवाएं भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न एजेन्सियों को वेअरहाउसिंग अवसंरचना निर्माण के लिए परामर्शदात्री सेवाएं एवं प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराता है। साथ ही यह वेअरहाउसिंग/लॉजिस्टिक्स क्षेत्र की कम्पनियों में प्रमुख भूमिका निभाने के साथ-साथ सरकारी विभागों,

अर्धसरकारी एजेन्सियों, स्वायत्तशासी निकायों, सहकारी संस्थाओं, व्यापारिक घरानों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा व्यापारियों एवं किसानों सहित विभिन्न ग्राहकों को आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

अपनी स्थापना से ही, केन्द्रीय भण्डारण निगम किफायती लागत पर कृषि आदानों, उत्पाद एवं अधिसूचित वस्तुओं के वैज्ञानिक भण्डारण के लिए सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है। कृषि क्षेत्र को सब्सिडाइज़ करने तथा अपने परिचालन को निरन्तर आगे बढ़ाने के उद्देश्य से निगम ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश किया है। आज निगम 3.09 लाख मी. टन भण्डारण क्षमता के 57 बांडेड वेअरहाउस 4 एअर कार्गो कॉम्प्लैक्स (चैन्नई, सिंगनाल्लुर, गोवा, आईजीआई एयरपोर्ट), के साथ 31 कंटेनर फ्रेट स्टेशन (सीएफएस) / अन्तर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) तथा 5 तापमान नियन्त्रित वेअरहाउस-अमृतसर, नीमकमहल, वंदनमेडू, वाशी, विरुगमबक्कम भी चला रहा है। केन्द्रीय भण्डारण निगम किसानों, व्यापारियों, निर्यातकों, आयातकों, पोत अभिकर्ताओं आदि के लाभ हेतु कीटनाशन तथा पैस्ट नियन्त्रण सेवाएं मुहैया करा रहा है। यह सुविधा रेल के डिब्बों, भोजन यानों, वायुयानों, अस्पतालों, होटलों एवं रेस्तरां सहित आयात-निर्यात कंटेनरों में प्रधूमन एवं पोत प्रधूमन आदि में भी प्रदान की जाती है।



* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

केन्द्रीय भंडारण निगम सड़क मार्ग द्वारा आयात-निर्यात व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत-बंगलादेश सीमा पर पैट्रपोल (पश्चिम बंगाल) में लैंड कस्टम स्टेशन पर एक ट्रक टर्मिनल चला रहा है। अपनी गतिविधियों में विविधता लाने के उद्देश्य से केन्द्रीय भंडारण निगम कंटेनर ट्रेन भी चला रहा है। निगम के पास अखिल भारतीय स्तर पर कंटेनर ट्रेन चलाने का श्रेणी-। लाइसेंस है। तथापि, यह निगम फिलहाल लोनी (दिल्ली) तथा कालम्बोली (नवी मुम्बई) में कंटेनर रेल टर्मिनल परिचालित करने सहित लोनी-जवाहर लाल नेहरू पोर्ट, लोनी-मुंद्रा तथा लोनी-पिपवाव क्षेत्रों में कंटेनर ट्रेन चला रहा है।

केन्द्रीय भंडारण निगम भारत एवं पाकिस्तान के बीच सड़क मार्ग से आयात-निर्यात व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए अटारी (पंजाब) में एकीकृत चैक पोस्ट (आईसीपी) का कार्गो टर्मिनल भी चला रहा है। केन्द्रीय भंडारण निगम के आईसीपी, अटारी के संतोषजनक कार्य निष्पादन को देखते हुए लैण्ड पोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा भारत-बंगलादेश सीमा पर अगरतला (त्रिपुरा) में स्थित आईसीपी के कार्गो टर्मिनल प्रबन्धन का कार्य आई.सी.पी. अटारी के समान शर्तों एवं निबन्धन पर निगम को प्रारम्भ में एक वर्ष की अवधि के लिए सौंपा गया है। पब्लिक वेअरहाउसिंग सुविधाओं का लाभ उठाने तथा किसानों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से केन्द्रीय भंडारण निगम किसानों को उनके जमा स्टॉक के भण्डारण प्रभारों में 30 प्रतिशत छूट देता है। किसानों को वेअरहाउस रसीद जारी की जाती है जो एक नेगोशिएबल दस्तावेज है जिसे गिरवी रखकर



वे कम दरों पर ऋण प्राप्त कर सकते हैं। फार्म स्तर पर किसानों को स्टॉक के भण्डारण तथा परिरक्षण की जानकारी देने तथा रोके जा सकने वाली भण्डारण क्षतियों को कम करने के उद्देश्य से किसानों को शिक्षित करने के लिए निगम अपनी किसान विस्तार सेवा योजना भी चला रहा है जिसके अधीन वेअरहाउसों में तैनात इसके तकनीकी कर्मचारी आसपास के गांवों में जाकर किसानों को फसल बाद की प्रौद्योगिकी का सम्पूर्ण ज्ञान देने के लिए प्रशिक्षण देते हैं। इस समय यह योजना निगम के विभिन्न वेअरहाउसों के माध्यम से चलाई जा रही है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम 1957 में अपनी स्थापना से ही लगातार लाभांश का भुगतान करने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम रहा है। निगम सरकार से किसी प्रकार की बजटीय सहायता पर निर्भर नहीं है तथा अपने सभी परिचालन एवं निर्माण योजनाएं अपने द्वारा सृजित आंतरिक संसाधनों से चलाता है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम ने रेलसाइड वेअरहाउसिंग कॉम्प्लैक्सों (आरडब्ल्यूसी) के विकास और प्रचालन के लिए सैन्ट्रल रेलसाइड वेअरहाउस कम्पनी लि. (सीआरडब्ल्यूसी) के नाम से शत-प्रतिशत स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी बनाई। यह कंपनी 10 जुलाई, 2007 को गठित की गई तथा इसने 24 जुलाई, 2007 को व्यापार शुरू करने का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। सीआरडब्ल्यूसी की अंशपूंजी में केन्द्रीय भण्डारण निगम ने 40.56 करोड़ रु. का अभिदान किया है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम ने 17 राज्य भण्डारण निगमों (एसडब्ल्यूसी) की इक्विटी में योगदान दिया है। जिसमें केन्द्रीय भण्डारण निगम का 50 प्रतिशत अंश है तथा शेष 50 प्रतिशत अंश संबंधित राज्य सरकारों के हैं। भारत में पारंपरिक भंडारण सेवाओं के अतिरिक्त अब वेअरहाउसों द्वारा वेल्ड एडिड सेवाएं जैसे कार्गो को समेकित करना और अलग करना, उनकी पैकेजिंग, लेबलिंग, बार कोडिंग आदि भी प्रदान की जा रही हैं।

केन्द्रीय भंडारण निगम ने देश में वेअरहाउसिंग तथा इससे संबंधित कार्यकलापों के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ-साथ खाद्यान्न, तिलहन, दालें

एवं टैक्सटाइल जैसे जूट एवं कॉटन, शुगर आदि के भंडारण हेतु वैज्ञानिक वेअरहाउसिंग सुविधाओं के माध्यम से मूल्य समर्थन एवं मूल्य नियंत्रण हेतु सरकार एवं इसकी एजेंसियों को अनुदान एवं सहायता प्रदान की है। उत्पादन एवं उपभोग करने वाले राज्यों में अपने वेअरहाउसों के विस्तृत नेटवर्क के साथ, निगम सैंट्रल पूल हेतु खाद्य सुरक्षा अधिनियम के कार्यान्वयन सहित खरीदे गए खाद्यान्नों के सुरक्षित भंडारण एवं परिरक्षण में सहायता करता है। खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अनुपालन हेतु निगम उत्पादन एवं उपभोग करने वाले राज्यों में अतिरिक्त भंडारण क्षमता सृजित कर सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वेअरहाउसिंग कॉरपोरेशन्स अधिनियम, 1962 के अनुसार केन्द्रीय भंडारण निगम के कार्य इस प्रकार हैं:—

- (क) भारत एवं विदेश में समुचित स्थान पर गोदामों एवं वेअरहाउसों का अधिग्रहण एवं निर्माण करना।
- (ख) व्यक्तियों, सहकारी समितियों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा कृषि उत्पादों, बीज, खाद, उर्वरक, कृषि उपकरणों तथा अधिसूचित वस्तुओं के लिए भंडारण हेतु वेअरहाउस चलाना।
- (ग) कृषि उत्पादों, बीजों, खाद, उर्वरक, कृषि उपकरणों तथा अन्य अधिसूचित वस्तुओं को वेअरहाउसों से ले जाने व लाने हेतु परिवहन की सुविधा का प्रबंध करना।
- (घ) राज्य भंडारण निगमों (एसडब्ल्यूसी) की अंशपूंजी में अभिदान देना।
- (ङ) कृषि उत्पादों, बीजों, खाद, उर्वरक, कृषि उपकरणों तथा अधिसूचित वस्तुओं के क्रय, बिक्री, भंडारण तथा वितरण उद्देश्यों हेतु सरकार के एजेंट के रूप में कार्य करना।
- (च) केन्द्र सरकार के पूर्व अनुमोदन से किसी केन्द्रीय अधिनियम या किसी राज्य अधिनियम के अधीन या स्थापित किसी निगम अधिनियम, 1956 के तहत गठित और पंजीकृत किसी कम्पनी जिसमें विदेशी कम्पनी या उनकी सहायक कम्पनियां भी



हों, वेअरहाउसिंग कॉरपोरेशन्स अधिनियम, 1962 के अन्तर्गत कार्य करने हेतु संयुक्त उद्यम में प्रवेश करना।

- (छ) सहायक कम्पनियां स्थापित करना।
- (ज) कृषि उत्पादकता या अधिसूचित वस्तुओं के लिए अपने वेअरहाउसों के बाहर कीटनाशन सेवा प्रदान करना तथा ऐसे अन्य कार्य करना जो निर्धारित किए जाएं।

केन्द्रीय भंडारण निगम देश की अग्रणी सार्वजनिक भंडारण एजेंसी है और देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। तथापि, बढ़ती हुई कारोबारिक प्रतिस्पर्धा को देखते हुए निगम ने आगामी वर्षों में कार्यनिष्पादन में सुधार लाने हेतु अनेक कदम उठाने का निर्णय लिया है जैसे— वेअरहाउसों की स्थिति में सुधार, कोलेटरेल मैनेजमेंट, ई—कामर्स, निजी फ्रंट टर्मिनलों (पीएफटी) का प्रारम्भ, भंडारण स्थान भरने के लिए नवीन पद्धतियां, वेअरहाउसिंग स्थान की ऑनलाइन बुकिंग, स्थान की ई—नीलामी, सीएफएस प्रचालनों में सुधार, बहुमंजिला वेअरहाउस, डीएमआईसी कॉरीडोर का विस्तार करने की योजना और साथ ही लॉजिस्टिक उद्योग के लिए माल एवं सेवा कर का अनुपालन (जीएसटी) भी बहुत उपयोगी होगा।

भंडारण एवं संबंधित कार्यकलापों के क्षेत्र में अपनी व्यावसायिक गतिविधियों में तेजी ला कर यह निगम संबंधित कार्यकलापों के क्षेत्र में जमाकर्ताओं के विभिन्न वर्गों के लिए वैज्ञानिक भंडारण की व्यवस्था करने में अग्रणी भूमिका निभाने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

नारी का बदलता स्वरूप

*रेखा दुबे



नारी शब्द मात्र ही सम्मान, ममता, श्रद्धा का प्रतीक है। महान कवि श्री जयशंकर प्रसाद जी ने नारी के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करते हुए कहा है कि—

ukjh rø døy J) k gk
fo'okl jtr ux&ix ry ea
ih wk l kr l h cgk djk
t hou dsl qj l ery ea

नारी मां, बहन, पत्नी और पुत्री के रूप में इस धरा पर ईश्वर की एक विशिष्ट रचना है जिसने अपने हर रूप से इस समाज की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पहले नारी केवल कूपमंडूक थी अर्थात् घर से बाहर की दुनिया से पूरी तरह अछूती। डरी सहमी—सी जिसे सहारे के लिए किसी न किसी के कंधों की आवश्यकता थी। उसके व्यक्तित्व को किसी ने सराहा न था। घर से बाहर की दुनिया में अपनी पहचान उसने कभी सोची न थी। लेकिन जैसे—जैसे समाज में परिवर्तन हुए और विज्ञान ने हमारे जीवन में प्रवेश किया, नारी के जीवन में भी बदलाव की शुरुआत हुई। नारी को शक्ति और विद्या की देवी कहा जाता था और ये माना जाता था कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। लेकिन ये सब केवल शाब्दिक था, वास्तविकता से कोसों दूर। उसे पूजनीय न मानें, कोई बात नहीं लेकिन उसका अस्तित्व सम्मान का तो अधिकारी है और ये मिलना भी चाहिए। अब उसने अपने अस्तित्व को पूरी तरह पहचान लिया है। नारी अब केवल घर की जिम्मेदारियों तक ही सीमित नहीं रही है और अपने कर्मक्षेत्र के विस्तार के लिए वह बधाई की पात्र है

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

कि घर और बाहर दोनों जगह की जिम्मेदारी को बखूबी निभा रही है। हमारे राष्ट्र के लिए ये गौरव की बात है कि इस देश की महिलाओं ने मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री के साथ विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में राष्ट्रपति पद पर आसीन होकर समाज को यह दिखा दिया है कि वह सर्वोच्च प्रतिष्ठित पद के लिए भी सक्षम है। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वयंसिद्धा है। समाज के हर क्षेत्र में उसका पदार्पण इस बात का प्रतीक है कि यदि मन में इच्छा शक्ति हो तो ऐसा कोई भी कार्य नहीं जो नारी नहीं कर सकती। आज नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है और उसकी दोहरी भूमिका ने कहीं न कहीं उसे पुरुष से सशक्त साबित किया है। ईश्वर ने नारी को तन से कोमल लेकिन मन से मजबूत बनाया है। इसके विपरीत पुरुष तन से मजबूत है और मन से कमजोर। जीवन के हर मुश्किल दौर में भी धैर्य धारण कर अपनी प्रखर बौद्धिक शक्ति से उसने अपनी कठिनाईयों को भी परास्त किया है। यही कारण है कि समाज ने उसकी पहचान को स्वीकारना शुरू किया है। पाक कला, खेल, राजनीति, विज्ञान, इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आने के साथ—साथ ज़मी तो ज़मी उसने आकाश में हवाईजहाज को उड़ाने का भी साहस जुटा लिया है और आज कई एयरलाइंस में महिला पायलेट भी हैं जो अपने कार्य में पूरी तरह सक्षम हैं। उसने साबित किया है कि वह ईश्वर की निरर्थक रचना नहीं है। अब वो समझ गई है कि वह वास्तव में अर्धांगिनी है और कंधे से कंधा मिलाकर अपने परिवार की हर खुशी के लिए प्रयास में अपने पति का साथ दे सकती है। मैं अंत में केवल इतना ही कहूंगी कि ; = ukjh iw ; Urj jels r= nork की भावना से न सही बस केवल दिल से सम्मान करिये नारी के हर रूप का, क्योंकि ये ईश्वर की अनमोल रचना है और जीवन देने का अधिकार भी नारी को देकर ईश्वर ने उसके स्वरूप को अनमोल बना दिया है।

bl l ekt dh rjDdh dks
vki dsule djrh gw
vki ds gj cnyrsLo: i dks
>q dj l yke djrh gw

सत्य की ओर

*पंचम सिंह गुसाईं



हम धर्म ग्रंथों व अन्य दार्शनिक किताबों में पढ़ते रहते हैं कि सत्य का पालन करना चाहिए परंतु जो धर्म ग्रंथ हम पढ़ते हैं, उनका अपने जीवन में कितना निष्ठापूर्वक पालन करते हैं, यह विचारणीय विषय है। कहावत भी है कि कथनी और करनी में बहुत अंतर है। यही बात हम अपने अंतःमन में टटोलते रहते हैं कि आखिर हमसे गलती कहाँ हुई। श्रीमद्भागवत् पुराण के प्रथम स्कंध, प्रथम अध्याय और प्रथम श्लोक व बारहवीं स्कंध के आखरी अध्याय व आखरी श्लोक में भगवान वेद व्यास लिखते हैं— “सत्यम् परम धीमहि” अर्थात् सत्य स्वरूप परमात्मा को याद करना। भाव यह है कि जब हम पैदा होते हैं तो रोने लगते हैं। उस समय जीव (मनुष्य) की पूर्वजन्म की स्मृति बनी रहती है और उसे अपने पिछले कई जन्म याद आते हैं और भगवान से प्रार्थना करता है कि “हे प्रभो! आपने मुझे फिर इस नश्वर संसार में भेज दिया।” अंत समय में भी वह परमात्मा को याद करता है कि मुझे इन चौरासी लाख जिया-जूनियों से मुक्ति देना, परंतु तब तक समय बहुत कम होता है, फिर वह इस भवसागर से चल बसता है। जन्म और मृत्यु के बीच का जो समय होता है, उसे हम असत्य में बिता देते हैं और अपने स्वरूप को भूल जाते हैं। यह जीव का स्वभाव है। बाबा तुलसीदास जी रामचरित मानस के द्वारा बताते हैं—

“पुर्नपि जन्मम पुर्नपि मरणम् जठेर अग्रि जठेर शयनम्”

हम बार-बार जन्म लेते हैं और मरते हैं। इस ब्रह्मांड का प्रत्येक जीव परमात्मा का स्वरूप है यानी

* अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सत्य स्वरूप है। प्रश्न यह है कि जब परमात्मा सत्य है तो जीव क्यों नहीं है। एक शिशु जब पैदा होता है तो वह ब्रह्म स्वरूप होता है। उसे सांसारिक वस्तुओं से कोई लगाव नहीं रहता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है तो वह संसार में इतना रम जाता है कि उसे अपने पूर्व जन्म की विस्मृति हो जाती है। इस तरह वह परमात्मा से विमुख होने के कारण अपने स्वरूप को भूल जाता है। जिस तरह जंगल में रहने वाला एक हिरन शिकारी के जाल में फँस जाता है, उसी प्रकार यह जीव भी मायाजाल में फँस जाता है।

सत्य का स्वरूप क्या है? परमात्मा ही सत्य है, जो स्वयं के भीतर है। कबीरदास जी कहते हैं—

^dLrjh dMy cl Sex <wscu ekgl
, d s?kV ?kV jle gānq; k nq kulkga**

कस्तूरी मृग के पेट में ही होती है परंतु वह वन में दूँढता रहता है कि सुगंध कहाँ से आ रही है। इसी प्रकार, जीव भी परमात्मा का अभिन्न अंश है। फिर भी वह बाहर दूँढता रहता है क्योंकि यह जीव का स्वभाव है कि वह सुख संसार में दूँढता है, जबकि संसार में दुःख ही दुःख है।

सत्य किसी से मांगा नहीं जा सकता। किसी से भीख नहीं मिल सकती। सत्य उधार नहीं मिल सकता। सत्य कहीं से सीखा भी नहीं जा सकता। क्योंकि जो भी हम सीखते हैं वह बाहर से सीखते हैं। सत्य हमारे भीतर है। न उसे पढ़ना है, न मांगना है और न ही किसी से सीखना है। ये सब खजाने हमारे ही अंदर हैं। बस, उसे अनुभव करना है। एक बार अनुभव हो गया, फिर हम इतने अमीर हो जाएंगे कि दुनिया की सारी दौलत एक तरफ और अंदर का खजाना एक तरफ। प्रश्न है कि दुनिया का यह खजाना हम कैसे अनुभव करेंगे। सतगुरु की मदद से हम इस खजाने को बाहर निकालेंगे या अनुभव करेंगे। सतगुरु भगवान का ही दूत होता है। गुरु का अर्थ है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए वही सतगुरु है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ये

छः शत्रु ही अंधकार हैं। इन्हीं शत्रुओं ने हमारे अंदर छुपे सत्य को ढक रखा है। सतगुरु अपने वैराग्य रूपी शस्त्र से इन्हें नष्ट कर देता है और हमें अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान करा देता है।

भगवान बुद्ध ने ध्यान के दौरान अपने 500 जन्म याद किए थे। उन्होंने जीव की आध्यात्मिक प्रगति के 8 नियम बताए। सम्यक दर्शन, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक कर्मात्त यानी कार्य का समापन, सम्यक स्मृति यानी भगवान की स्मृति बनी रहे, सम्यक समाधि यानी मन के विरुद्ध अवस्था। वहीं पतंजलि ऋषि ने योग दर्शन में अष्टांग योग का वर्णन किया है— यम (ब्रह्मचर्य, तप, अपरिग्रह, सत्य, अस्तेय, इतियम), नियम (शौच, देव पूजा, स्नान इत्यादि), आसन (कुशा, कंबल और मृगछाला), प्राणायाम (पूरक, कुंभ और रेचक), प्रत्याहार (किसी से कुछ न लेना), धारणा (ईश्वर ही सत्य है), ध्यान और समाधि। यदि समाधि लग गई तो हम अपने स्वरूप को जान सकते हैं। समाधि लगने के पहले 7 नियमों का पालन करना होगा। यह तभी संभव होगा जब हम अपनी चित्त की वृत्तियों को रोकने में कामयाब होंगे, सतगुरु ही चित्त की वृत्तियों को रोकेंगे, 'योगस्य चित्त वृत्ति निरोधः', चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग है। भगवान बुद्ध व पतंजलि ऋषि ने हमें यह शिक्षा दी है कि जीव का एकमात्र लक्ष्य सत्य का ही साथ देना है फिर 500 जन्म क्या हजारों जन्मों का भी हम हिसाब रख सकते हैं।

कई जिया—जूनियों में भटकने के बाद हमें यह मनुष्य शरीर का चोला मिला है इसलिए कि भगवान ने मनुष्य को विवेक और बुद्धि दी है, बाकी किसी योनि में यह उपलब्ध नहीं है क्योंकि भगवान चाहते हैं, इस योनि में रहकर मनुष्य विवेक और बुद्धि के द्वारा मुझे जान सके और सत्कर्म करे। विष्णु पुराण में लिखा है, मानव शरीर को पाने के लिए स्वर्ग में देवता भी तरस जाते हैं और कहते हैं—

“गायन्ति देवा किल गीतकानि धन्यास्तुः भारत भूमि भागे,
स्वर्गापवर्गा स्पद्यार्ग भूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वातः।”

भारत भूमि में जन्म लेने वाले लोग धन्य हैं। स्वर्ग और परम पद के समान इस देश में देवता भी

देवत्व को छोड़कर मनुष्य योनि में जन्म लेना चाहते हैं। यदि ऐसी बात है तो फिर हम मनुष्य का चोला पाकर भेदभाव, राग, द्वेष, अविद्या, अहंकार संसार की सब अनित्य वस्तुओं को क्यों अपना रहे हैं। अपनी संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य सभ्यता को क्यों गले लगा रहे हैं। क्यों हम वेदों का अनुकरण नहीं कर रहे हैं। क्या हमारा लक्ष्य केवल अर्थ तक ही सीमित रह गया है और अपनी मर्यादाओं को दरकिनार कर रहे हैं।

अलैकजेंडर ने भारत पर कई बार आक्रमण किया और काफी सारा धन इस देश से लूट कर ले गया, लेकिन वह मरते समय किसी को एक संदेश देकर गया कि जब मुझे कब्र में दफनाओगे तो मेरे दोनों हाथ बाहर रख देना कि “खाली हाथ आया था और खाली हाथ जा रहा हूँ।” क्या अलेकजेंडर का यह संदेश हमारे लिए काफी नहीं था। इसके बावजूद भी हमने अपनी आँखों पर धृतराष्ट्र की तरह पट्टी बाँध रखी है। आजकल टेलीविजन चैनलों पर व पंडाल में भी धर्म के नाम पर कई कथाएं होती हैं। कई कथावाचक हैं और करोड़ों लोग कथा सुन रहे हैं, परंतु अक्सर यही देखने या सुनने में आया है कि धर्म को अर्थ से जोड़ दिया गया है, जबकि होना यह चाहिए कि अर्थ को धर्म से जोड़ना चाहिए। इसलिए कथा का सार भी चला गया है। आनंद से आडंबर पर ज्यादा विश्वास होने लगा है। वक्ता कथा, कर्म और अर्थ की बात ज्यादा करने लगे हैं और श्रोता, श्रोता नहीं सरोता ज्यादा हो गए हैं। कथा स्थल में जाकर निंदा करने से चूकते नहीं हैं, इसलिए श्रोता और वक्ता दोनों ही अपने-अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाते हैं।



शास्त्रों में एक नीति वाक्य लिखा है— “रक्षति पुण्यानि पुरा कृतानि” अर्थात् मनुष्य के पुण्य प्रबल हों तो उसकी रक्षा हो सकती है, परंतु जब हम मार्ग से ही भटक गए हैं, कर्तव्य से च्युत हो गए हैं, तो पुण्य प्रबल कैसे होगा? पुण्य प्रबल नहीं होगा तो सत्य की ओर कैसे बढ़ेंगे? ‘वेद’ भगवान की वाणी है और भगवान की वाणी कभी भी असत्य नहीं होती है। जब-जब भगवान ने सगुण रूप धारण किया है तब-तब लोक कल्याण के लिए यह शिक्षा दी है कि जीव को आत्म कल्याण के लिए क्या करना चाहिए। क्या सत्य है और क्या असत्य है? किन-किन चीजों का निषेध करना चाहिए। ये सब बातें वेद, उपनिषदों के द्वारा मनुष्य तक पहुँची हैं, ताकि मनुष्य अपना कल्याण कर सके और मुझ परमात्मा को प्राप्त कर सके। मेरे धाम में आ सके क्योंकि वह मेरा ही अंश है। इसलिए मनुष्य के जीवन को चार आश्रमों में विभक्त किया गया। 1 से 25 वर्ष तक पालन-पोषण व शिक्षा, 25 से 50 वर्ष तक गृहस्थ, धन अर्जन, संतान उत्पत्ति इत्यादि, 50 से 75 वर्ष तक वानप्रस्थ यानी निष्काम कर्मयोग द्वारा समाज सेवा, भजन, कीर्तन इत्यादि और 75 से 100 वर्ष तक संन्यास फिर निकर्म होकर भगवान को समर्पित होने का विधान है। श्रीमद्भागवत् के 11वें स्कंध में लिखा है—

“दुर्लभो मानषो देहः प्राणिनाम् क्षणभंगुरः
तस्मिन् प्राप्ते तु कर्तव्यं सर्वथेआत्म साधनम्।”

क्षणभंगुर में नष्ट, यह मानव शरीर प्राणियों के लिए अत्यंत दुर्लभ है। इसके प्राप्त होने पर सम्यक प्रकार से आत्म कल्याण कर लेना चाहिए।

बाबा तुलसीदासजी रामचरित मानस के द्वारा लोगों को बताते हैं—

‘निज अनुभव अब कहेदु खगेशा
बिनु हरि भजन मिटहि नहीं केशा’

‘राम कृपा बिनु सुन रघुराई
जानि न जाई राम प्रभुताई’

‘बिनु जाने होई न परतीती
बिनु परतीती होई न प्रीती।’

भगवान को जाने बिना समर्पण नहीं होगा और समर्पण के बिना प्रेम नहीं हो सकता है। भक्त प्रह्लाद अपने सखाओं को बताते हैं— श्रवणनम्, कीर्तनम्, विष्णु पाद सेवनम्, स्मरणम्, अर्चनम्, वन्दनम्, दास्यम् सख्यम्, आत्म निवेदनम्— इस नवधा भक्ति से जीव भव सागर से क्षीर सागर (वैकुण्ठ) प्राप्त कर सकता है। गीता में भी भगवान कहते हैं— “धर्म रक्षति रक्षतः”, जो धर्म के साथ है, धर्म भी उसी की रक्षा करता है। इसलिए “सर्व धर्मानाम् परित्यजम् मामेक शरणं व्रजः”, सब धर्मों को छोड़कर सिर्फ मेरी शरण में आ जाओ।

सत्य धर्म के 4 पहियों में से 1 पहिया है जो कलियुग में नहीं है, जैसे— संसार में भी धर्मों का आधार गीता है, वैसे ही सत्य संपूर्ण जीवन का आधार है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक हम अपने कर्तव्यों को जो-जो भी निर्वाह करें व सत्य में रहकर ही करें। सत्य ही धर्म है। सत्य ही आध्यात्म है। शरीर साधन है। शरीर में रहने वाली आत्मा सत्य है। सत्य की हमेशा जय होती है। सत्य कभी मरता नहीं। सत्य कभी जन्म नहीं लेता। सत्य व्यापक है। निर्विकार है। आत्माराम है। विश्व के महापुरुषों ने अपना संपूर्ण जीवन सत्य में बिताया और अंत में वे सत्य में ही लीन हो गए। सत्य ही सच्चिदानंद है। सत्य ही आनंद है और यही जीवन का सत्य है। संसार के सारे कार्य करो, परंतु सत्य को मत त्यागो। सत्य ही हमारा परम मित्र है। राजा जनक जैसा कोई संसारी नहीं था, किंतु संसारी होते हुए भी वे कभी संसार से लिप्त नहीं हुए और प्रबल वैरागी रहे, इसलिए रीति रखो संसार से और प्रीति रखो भगवान से। निम्नलिखित पंक्ति से मैं अपने शब्दों को विराम देता हूँ। किसी महापुरुष ने कहा है—

“जल में कुंभ है, कुंभ में जल है, बाहर-भीतर पानी,
फूटा कुंभ जल-जल ही समाना, यह तथ्य कहो ज्ञानी।”

कुंभ हमारा शरीर है और इस कुंभ के अंदर जो जल है वह हमारी आत्मा है, जब ये शरीर नष्ट हो जाता है तो आत्मा रूपी जल ब्रह्म रूपी जल में मिल जाता है और यही ज्ञान जब जीव को हो जाता है तो उसका जीवन धन्य हो जाता है। यही जीवन का लक्ष्य है और यही मुक्ति का मार्ग है।

हे मानसून!

*अरविन्द मिश्र



हे मानसून!
भला तुम कब आओगे? तुम्हारे आने में देरी होने से सब तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। जिधर देखो, उधर सब तुम्हारे

ही बारे में कानाफूसी करते दिखाई देते हैं और तो और खुद 'सरकार' भी तुम्हारी आमद को लेकर खुशामद करती सी लगती है। तुम तो जानते हो मानसून! यहाँ सारा दारोमदार तुम्हारे ही सिर पर है। बातें चाहे कोई कितनी ही तरह की कर ले लेकिन किसी के बस का है कुछ नहीं। बोनी बखरनी से लेकर वहाँ महावट तक के लिये सब तुम्हारे ही ऊपर निर्भर बने रहते हैं, अपनी खीसों निपोरते हुए। हाँ, बीच में महाराष्ट्र प्रान्त वाले कृत्रिम वर्षा कराने की योजना बना रहे हैं लेकिन, मुझे उनका ऐसा करने की योजना बनाना ठीक नहीं लगा। मानसून आने में देरी हो गई या बारिश समय पर नहीं हुई तो इसका क्या मतलब। तुम्हें उन सारी विरहणियों को भी याद रखना है जो गाती फिर रहीं हैं कि 'बरस जरा जमकर बरस और इतना बरस कि वो आ न सकें और जब वो आ जाएं तो फिर इतना बरस कि फिर वो जा न सकें'।

इसलिए मेरी सोचो मैं धरती हूँ तुम्हारे बिना अब और बिल्कुल नहीं रहा जाता। मेरा बुरा हाल है एक-एक दिन एक बरस-सा बीत रहा है। हमसे ये विरह वेदना सही नहीं जाती। मैं कितने दिनों से आसमान की ओर बाँहें फैलाए तुम्हारी बाट जोह रही हूँ। तुम इतने निष्ठुर कैसे हो सकते हो। मैं समझ सकती हूँ साल के बारह महीने में से आठ महीने तो तुम्हारा पता ही नहीं रहता। कभी भूले-भटके आ गए तो वह आना और न आना एक बराबर समझिए। केवल चार माह ही तो तुम्हारी

याद में खोई रहती हूँ। जब मुझे पक्का भरोसा होता है कि अब तुम मुझसे गलबहियाँ करने जरूर आआगे और हाँ, 'अति सर्वत्र वर्जयते' के मद्देनजर संतुलित वर्षा का पाठ अच्छे से रटकर आना।

तुम्हें कुछ लगता नहीं है कि मैं धरती हूँ धरती। तुम मेरे धरती होने की इतनी बड़ी सजा मत दो, आखिर दुनिया वाले मेरे धात्री होने की कितनी कीमत मांगेंगे? वैसे भी मेरे ऊपर कितना अत्याचार नहीं बरपाया जा रहा। मैं कहूँ तो किससे और क्या कहूँ? मेरे शरीर पर मारे प्यासेपन के दरारें पड़ने लगीं हैं। सब मुझे देखकर हँसी ठिठोली करते हैं, इधर है कि ऐसी अंधी दौड़ मची है कि किसी को कुछ सोचने-समझने की मानो फुरसत ही नहीं है। शहरीकरण का ऐसा भूत सवार हो गया है कि सारे जंगल समाप्त हो गए हैं। कहीं-कहीं तो ये हालत है कि मीलों दूर तक दृष्टि डालने पर पेड़-पौधों का नामोनिशान तक नजर नहीं आता। केवल सीमेंट, कंकरीट के जंगल दिखाई पड़ते हैं। कोई यह नहीं कहता कि यदि वनस्पति नहीं रही, वृक्ष और वनसम्पदा नहीं बचेगी तो धरती फिर जीवों को भी लम्बे समय तक धारण नहीं कर पाएगी। इसलिए थोड़ा

कहा, बहुत समझो और जल्दी आओ मानसून। कब का शुरू हो गया जून। ये सब यूँ ही डींगें हाँकते रहते हैं कि रेत में से तेल निकाल लेंगे। पानी तो निकाल नहीं पाते। सारे भले मानुष एक रहीम की ही मान ले तो जिंदगी अब भी अच्छे से बसर हो सकती है -



ʃfgeu i kuh jk[k] fcu i kuh l c l wA
i kuh x, u Ācj\$ ek rh ekučk pw**A

* कनिष्ठ अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल



व्यक्तित्व विकास में सहायक : सकारात्मक विचार

*महिमानन्द भट्ट

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक विचार का विशेष महत्व है। घर, परिवार, समाज और राष्ट्र सभी सकारात्मक विचार के बल पर प्रगति कर सकते हैं। सच ही कहा गया है कि सकारात्मक बनें और सकारात्मक सोचें (Be Positive and Think Positive)। जीवन में कोई भी कार्य जन्म से सफल नहीं होता, कार्यों को निरंतर विकसित करने से ही सफलता मिलती है। सकारात्मक विचार विकसित करने तथा नए विचारों को जीवन में जगह देने के लिए यदि दिमाग को खुला छोड़ दिया जाए तो इससे एक बदलाव की प्रक्रिया भी शुरू होती है और सीखने की भी। बदलाव के लिए तैयार रहकर

सकारात्मक व्यक्ति सदा दूसरों में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

सकारात्मक विचार दिमाग को समाधान और नकारात्मक विचार संकीर्णता के रास्ते पर ले जाता है।

ध्यान सकारात्मक एटिट्यूड विकसित करने में लगा दिया जाए तो इसके अच्छे परिणाम सामने आते हैं। विचारों का गुलाम नहीं बल्कि उन्हें काबू में रखने की कला आनी चाहिए और इसके लिए खुद को

बदलने की ताकत रखना जीवन के लिए एक नया मोड़ सिद्ध हो सकता है।

शोध कहते हैं कि मन में आने वाले विचारों में नकारात्मक विचारों की संख्या अधिक होती है जो हमें खुशी और अच्छी सेहत से दूर रखते हैं, इसलिए खुशियों के लिए विचारों को बदलना जरूरी है। यूएस नेशनल साइंस फाउंडेशन के अनुसार आमतौर पर एक दिन में करीब 50 हजार विचार आते हैं जिनमें से 70 से 80 प्रतिशत विचार नकारात्मक विचार होते हैं।

मनोवैज्ञानिक शोधकर्ताओं का मानना है कि विचार एक कला है। अपनी सकारात्मक ऊर्जा को

आगे बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक कार्य अवश्य करना चाहिए। यदि चिंतन में लचीलापन, संतुलन, सहजता, आशावादिता है तो विचार सकारात्मक होंगे और यदि आग्रह, आवेश या उपेक्षा वाला चिंतन मन में होगा तो नकारात्मक भाव पैदा होंगे, अर्थात् सकारात्मक विचार दिमाग को समाधान और नकारात्मक विचार संकीर्णता के रास्ते पर ले जाता है।

विचार, जीवन रूपी बहुमंजिले भवन की वह आधारशिला है जो सपनों की उड़ान को सौ फीसदी बदल डालती है। सकारात्मक विचार आत्म विकास की थैरेपी है। सही और सकारात्मक विचार आंतरिक शांति, सफलता, मधुर संबंध, उत्तम स्वास्थ्य और व्यक्तिगत संतुष्टि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सकारात्मक विचार वह उत्तम थैरेपी है जिससे जीवन को शक्तिशाली और ऊर्जावान बनाने के मार्ग खोजे जा सकते हैं। सही विचार दिमाग के लिए सॉफ्टवेयर जैसा है जिसका सही उद्देश्य के लिए सही दिशा में उपयोग किया जाए तो परिणाम भी सार्थक एवं उपयोगी होंगे।

विचारों में ऐसी ताकत होती है जो व्यक्ति को ऊर्जा से भर देती है। असफलता के पहाड़ को तोड़कर सफलता की नई राह दिखा सकती है। क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, प्रेम, ऊर्जा, ईमानदारी सकारात्मक विचारों के साथ समाविष्ट होने चाहिए न कि नकारात्मकता के साथ। सकारात्मक भाव से किए गए कार्य का सकारात्मक फल मिलेगा और नकारात्मक भाव का फल भी नकारात्मक ही मिलना निश्चित है।

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सकारात्मकता सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ाती है जबकि नकारात्मक विचार नया सीखने व नए संसाधन जोड़ने की क्षमता कम करते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण ही हम अपने ही समान दूसरे सकारात्मक व्यक्ति और उसके विचारों के साथ जुड़ते हैं। अपने विचारों पर गौर कर उन्हें सकारात्मक विचार में बदलना और नकारात्मक शब्दों की जगह सकारात्मक शब्दों को अपनाना श्रेयस्कर होता है। जीवन में खुशियां लाने के लिए जरूरी है कि नकारात्मक विचारों की जगह सकारात्मक विचारों को जगह दी जाए। जब खुश रहना हमारा स्वभाव बन जाता है तो आदतें भी वैसी ही हो जाती हैं। हर नया दिन, नई खुशियों का प्रतीक बन जाता है। रोजमर्रा की भागदौड़ में सबसे अधिक हम अपने को भूल जाते हैं। अपनी कमजोरियों के बावजूद हर समय काम करने के लिए तैयार रहने का जज्बा और बिना डरे फैसले लेने का स्वभाव व्यक्ति को खास बना देता है। खुद को बदलने की ताकत आना जीवन के लिए एक नया मोड़ होता है। हमें अपने विचारों का गुलाम नहीं बल्कि उन्हें काबू में रखने की कला आनी चाहिए और यह तभी संभव है जब हम सकारात्मक विचार मन में रखें।

सकारात्मक स्वीकृति के साथ पहल करने से परिणाम भी सकारात्मक आते हैं। जैसे लम्बी बीमारी का उपचार करा रहा व्यक्ति सोचे कि मैं ठीक नहीं हो सकता, यह सोच नकारात्मक भावना को बल देती है। सकारात्मक दृष्टिकोण को इस तरह अपनाया जा सकता है, जैसे :-

- ▲ **ej sik ; g ughag&** सोचें कि खुश होने के लिए यही जरूरी नहीं है।
- ▲ **vc nj gks pqlh g&** आज ही इस कार्य को करने का सही समय है।
- ▲ **e&det kj g&** जितना सोचता हूँ, उससे कहीं अधिक मजबूत हूँ।
- ▲ **e&HX; 'kyh gkrk ; fn&** भाग्यशाली हूँ कि मैं जीवित और आज़ाद हूँ।
- ▲ **e&VW pqlk g&** मैं हर रोज उबर रहा हूँ।

▲ **e& ; g dle ughat kurk&** कहीं-न-कहीं से शुरूआत होती है। कोशिश करूंगा तभी अपनी प्रतिभा जान पाऊँगा।

ठीक ही कहा गया है कि- **t hou pyus dk ule-** बहुत पुराने समय से कहा जाता है, किंतु जीवन चलने का नाम का मतलब सिर्फ सड़क पर या गली या खेत-खलिहान में नहीं बल्कि चलने का अर्थ है गति- दिल+दिमाग से अर्थात् काम करने की लगन। सकारात्मक दृष्टि अपनाते हुए यदि एक रास्ता बंद हुआ तो हजार रास्ते और हैं। बस सिर्फ उन रास्तों को खोजने की जरूरत है और खोजने के लिए निरंतर संघर्षरत रहना जरूरी है। यह रास्ता किसी को देखने से, किसी की आत्मकथा पढ़ने से या अन्य माध्यमों से हो सकता है।

सकारात्मक सोच विकसित करने से कार्यकुशलता

और आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इसके लिए नए विचारों को जीवन में जगह देने के लिए दिमाग को खुला रखना जरूरी है। यही सीखने की प्रक्रिया भी है और बदलाव की भी। किन्तु असफलता से भी जीवन में काफी कुछ सीखा जा सकता है, जिसके लिए "सकारात्मक सोच (Positive Thinking) पर सर्वाधिक ध्यान दिया

**एक पेड़ से लाखों
माचिस की तीलियां
बनती हैं, लेकिन एक
तीली लाखों पेड़ जला
देती है!**

**इसी प्रकार एक
नकारात्मक विचार
या शक आपके हजारों
सपनों को जला सकता
है!**

जाना चाहिए। कार्य के दौरान नकारात्मक सोच अर्थात् एक-दूसरे को विरोधी मानना किसी भी कार्य की असफलता का मुख्य कारण है। नकारात्मक सोच के साथ यदि सकारात्मक कार्य करते भी हैं तो असफलता की संभावना अधिक रहती है और यदि सकारात्मक सोच के साथ कोई भी कार्य करें तो सफलता की संभावना दोगुनी हो जाती है क्योंकि सकारात्मक सोच की शक्ति आपके साथ हमेशा बनी रहती है। किन्तु यह जरूरी नहीं कि हर तरह की सोच आपको सकारात्मक दिशा

में ले जाए। इसके लिए हमेशा सकारात्मक तत्वों पर ही जोर देना चाहिए ताकि परिस्थितियों पर काबू रखा जा सके।

आज नकारात्मक सोच के स्थान पर सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए जरूरी है कि एक-दूसरे की कमियाँ या बुराईयाँ देखने के स्थान पर अच्छाईयों को साथ लेकर आगे बढ़ा जाए। आखिर दुनियां में ऐसा कौन है जो अपने आप में पूर्ण माना गया हो। कमियाँ सभी में होती हैं। अतः ठीक ही कहा गया है कि गिलास

सकारात्मक नजरिये के कारण मानसिक तनाव कम हो जाता है!

सकारात्मक नजरिये के फलस्वरूप कार्य की क्षमता बढ़ जाती है!

सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास भी सकारात्मक नजरिये से होता है!

को आधा खाली देखकर यह मत कहें कि गिलास आधा खाली है, उसके भरे हुए तत्व को मूल्य दें कि यह गिलास तो आधा भरा हुआ है। गुलाब के पौधे को ही लें, हमारी दृष्टि गुलाब के फूल पर होनी चाहिए न कि गुलाब

के पौधे पर कितने कांटे हैं उस पर। यही व्यक्ति के सकारात्मक विचार हैं।

सकारात्मक विचार विकसित करने के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों सहित व्यावसायिक सफलता या संगठनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भी नकारात्मक सोच के स्थान पर सकारात्मक सोच अपनाने पर बल देना जरूरी है क्योंकि व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र सकारात्मकता के साथ प्रगति कर सकते हैं। यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक सोच का विशेष महत्व है। समय की मांग है कि सभी को अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाकर एक-दूसरे के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करनी होगी। एक-दूसरे को विरोधी न मानकर हितैषी मानने में ही भलाई है।

आज विभिन्न संस्थाओं द्वारा सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए 'yIMj' ki fLdy MoyieV dk Øe*' आयोजित किए जाते हैं जिसमें विभिन्न कौशल विकसित करने के लिए सकारात्मक गुणों जैसे आत्मविश्वास, सत्यनिष्ठा, सृजनात्मकता, साहस, उत्साह, संप्रेषण कौशल, तकनीकी सामर्थ्य, मैत्रीभाव एवं स्नेह, निर्णयात्मकता, अच्छा व्यवहार, उच्च मनोबल, दूरदर्शिता, सुदृढ़ चरित्र विषयों पर जोर दिया जाता है जो सकारात्मकता की सफलता के लिए सीढ़ी का काम करते हैं।

आज जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए सकारात्मकता के साथ स्पष्ट कॉन्स्युनिकेशन का भी अहम योगदान है। जिस कार्य के लिए आप सफलता की अपेक्षा करते हैं, उस कार्य को समझने और समझाने की प्रतिभा भी जरूरी है। जिसके लिए आपका दृष्टिकोण और बाधाओं के समाधान का विवेचन स्पष्ट होना चाहिए।

यदि व्यक्ति अपने विचारों का कुशल प्रबंधन करना सीख लें तो यह उसके व्यक्तित्व विकास में सहायक हो सकता है, जैसे— अनियंत्रित और बिखरे हुए विचार तेज गाड़ी की तरह होते हैं जिन पर ब्रेक नहीं लगाई गई तो दुर्घटना हो सकती है। अर्थात्— 'l koèkuh gVh nqkWuk ?kVh*' इसलिए विशेषज्ञ मानते हैं कि ज्यादा सोचना बहुत अधिक खाने जैसा है। जैसे अधिक खाने से पेट गड़बड़ाने लगता है ठीक उसी प्रकार ज्यादा सोचने से मन और दिमाग दोनों भारी हो जाते हैं और दिमाग में कई तरह की उलझनें आपस में टकराने लगती हैं जो हमारी कार्यकुशलता को प्रभावित करती हैं।

अतः आज से ही एक सकारात्मक संकल्प के साथ चलने की शुरुआत करें ताकि सकारात्मकता का सिलसिला हमारे व्यक्तित्व विकास को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर सहायक सिद्ध हो सके।

- लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए, कभी-कभी गुच्छे की आखिरी चाबी ताला खोल देती है।
- सकारात्मक विचार सफलता का मूलमंत्र है। सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास भी सकारात्मक नजरिये से होता है।
- सकारात्मक नजरिये से निर्णय लेने की क्षमता बढ़ जाती है।

नया नजरिया

*एस. नारायण

चांद को देखो वह न किसी रूपसी का चेहरा है
और न ही कोई तिलस्मी कंडील
वह तो सारे जहां को ठंडक देने वाला
एक ^ʌokrkudju* है।

सूरज को देखो वह न तो सप्ताश्व देव है
न ही सुरपुरी का नरेश
वह तो ऊर्जा और ऊष्मा देने वाला
विशालकाय ^ʌwj ghwj* है।

हवा न तो वियोगी का दूत है और न ही
श्यामा की केशराशि का सुगंध वाहक

वह तो मात्र वायुस्तम्भ है
क्षितिज और धरातल के बीच
^ʌgekjk l rgy cukusokyk*

आदमी को देखो, खुद को परखो
न वह नियति की कठपुतली है
और न ही समय का दास
वह स्वयं ही अपनी रचना और
संहार का एक ब्रह्मा है
^ʌozekzgs fo'odekzgs

* उप महाप्रबंधक (कार्मिक), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भगवान का सहारा

*नीलम खुराना

मुझको सहारा मिल गया भगवन जी आपका।
आसान हो गया है, मंजिल का रास्ता।

कुरबत तेरी मुझे प्रभु, जब से मिल गई,
जन्मों—जन्म की सोई, तकदीर खुल गई,
मन—माया का अंधेरा, सब दिल से हट गया,
आसान हो गया है, मंजिल का रास्ता।

सब बन्धनों से आपने, मुझे कर दिया आज़ाद,
दे कर के नाम सच्चा, जीवन किया है शाद,
झूठे जगत से न रहा, अब कुछ भी वास्ता,
आसान हो गया है, मंजिल का रास्ता।

उपकार आपके प्रभु, कैसे करूं बयान,
महिमा महान आपकी, छोटी मेरी जुबान,
चरणों में ठौर देकर, अपना बना लिया,
आसान हो गया है, मंजिल का रास्ता।

जन्नत की चाह अब तेरी, ये दासी क्यों करे,
शाहों के शाह भगवन, जब आप मिल गए,
हुई दूर सारी ख्वाहिशें, आनन्द मिल गया,
आसान हो गया है, मंजिल का रास्ता।

* वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भारत अध्यात्म एवं विज्ञान की जन्मभूमि

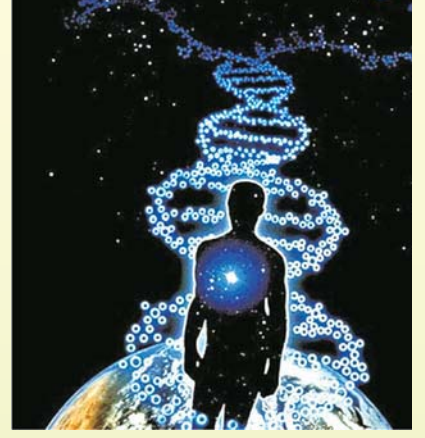
*कृष्ण कुमार

भारत में पैदा हुए या बस रहे जिन लोगों ने भारत के आध्यात्मिक ग्रन्थों यथा— वेद, पुराण, शास्त्र और ब्राह्मण ग्रन्थों का न तो कभी अध्ययन किया है और न ही कभी आध्यात्मिक मनीषियों के व्याख्यानों का मनन—चिन्तन किया है। वे और उनकी संतानें यह मान कर गर्व महसूस करती हैं कि आध्यात्मिक चर्चा मात्र समय की बर्बादी है तो भारतीय धार्मिक कृत्य मात्र अफीम के नशे के समान है। धर्म कर्म में विश्वास रखने वाले अंधविश्वासी हैं और समय की बर्बादी करते हैं। फिर भी वे इस बात से सहमत हैं कि कभी विदेशी लोग भारत के मध्य क्षेत्र में स्थित तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों में ज्ञान अर्जन करने आया करते थे।

यहाँ मैं यह याद दिलाना चाहूँगा कि तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालय थे और जहाँ पर आध्यात्म के साथ—साथ जल, थल, नभ के विज्ञान सहित गणित, भूगर्भ विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान की भी शिक्षा दी जाती थी एवं विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अन्वेषण भी होते थे। आगामी अनुच्छेद में मैं भारतीय वैज्ञानिकों का परिचय दूँगा। भारतीय ज्ञान एवं संस्कृति में विश्वास रखने वाले भारतीय कृपया गर्व से अपना माथा ऊँचा कर लेना एवं सीना फुला लेना और पश्चात्य सभ्यता के गर्त में जा रहे लोगों से कहना कि भारत देश जादू—टोने, टोटकों एवं अंधविश्वास का देश नहीं है, बल्कि ज्ञान—विज्ञान की नौका है जिसमें सवार होकर व्यक्ति अपना यह लोक भी बना लेता है और परलोक भी बना लेता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पर विजय प्राप्त करने एवं इन्द्रियों पर काबू पाने के श्रेष्ठतम उपाय हैं जो इनका अनुकरण करता है भगवान से उसकी निकटता हो जाती है जैसे— तुलसी, सूर, मीरा, रसखान और बल्लभाचार्य आदि की हुई।

तर्क के आधार पर समझना और प्रयोग के माध्यम से सिद्ध करना ही ज्ञान कहलाता है। किसी सिद्धान्त अथवा मत को वैज्ञानिक संज्ञा देने से पूर्व वैज्ञानिक उसमें कई बार निरीक्षण—परीक्षण करते हैं। प्रयोगों से प्राप्त आंकड़ों, सूचनाओं आदि पर ध्यान देते हैं। उनका मूल्यांकन करते हैं, तभी उस सिद्धान्त को अथवा तथ्य को वैज्ञानिक

आधार देते हैं। वैज्ञानिक आधार सत्य और तथ्यों से ढका होता है। यहाँ विवेक और तर्क साथ—साथ करते हैं। इन सब संवादों को ध्यान में रख कर सोचा जाय तो पता चलता है कि सम्पूर्ण विश्व की वैज्ञानिक परंपराओं



में भारत को प्रमुख तथा प्रथम स्थान पर रखा जाता है। भारतीय वैज्ञानिक परंपरा को दो भागों में बाँट कर प्रमाण पत्र प्रमाणित किया जा सकता है—

यथा— 1. प्राचीन भारतीय विज्ञान

2. मध्यकालीन, आधुनिक भारतीय विज्ञान

मोहन जोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाई में स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने मिले हैं। सिंधु घाटी के लोग सुनियोजित नगर बनाकर रहते थे। यहाँ के नगरों में भवन, सड़कें, नालियां पक्की ईंटों से बनती थीं। हथियार कांसे के बनते थे। परिवहन व्यवस्था सुचारु थी। सूती और ऊनी वस्त्रों का विकास भी हो चुका था।

वैदिक काल में लोगों को खगोल विज्ञान का अच्छा ज्ञान था। वैदिक भारतीय ऋषियों को 27 नक्षत्रों का पूरा ज्ञान था। मगध नामक ऋषि ने ज्योतिष वेदांत में तत्कालीन खगोल विज्ञान को व्यवस्थित कर दिया था। वैदिक युग में गणित और जन्मतिथि का पर्याप्त विकास हुआ। वैदिक भारतीय 1012 तक गिन सकते थे। इसके विपरीत उसी काल में यूनानी मात्र 104 तक और रोमवासी 108 तक गणना कर सकते थे।

इसी वैदिक काल में चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्राप्ति के प्रमाण मिलते हैं। त्रेतायुग में लक्ष्मण मूर्छा के समय हनुमान संजीवनी के साथ तीन बूटियां और भी लाए थे यथा— शल्यकरणी, अचेतकरणी और घावभरणी। ऐसी जड़ी—बूटियां आज भी हमारे पौराणिक पर्वतों पर

* पूर्व प्रबंधक (राजभाषा), केन्द्रीय भंडारण निगम, नई दिल्ली

उपलब्ध हैं। कुछ बूटियां भारत से विदेशी ले गए उनके रस, छाल से गंभीर व्याधियों की औषधियां बना डाली और हम उन्हें विज्ञान के जन्मदाता मान रहे हैं। मानव शरीर के सूक्ष्म अध्ययन के लिए शव विच्छेदन तब भी कुशलता से किया व उपयोग में लाया जाता था। इसके अलावा विभिन्न रोगों का उपचार पहले जिन जड़ी-बूटियों से किया जाता था वही अब परिष्कृत रूप से उपलब्ध कराई जाती है। गुप्तकाल में विज्ञान की सभी शाखाओं ने उन्नति की। इस काल में बीजगणित, ज्यामिति, रसायन शास्त्र, भौतिकी, धातु शिल्प, चिकित्सा एवं खगोल विज्ञान का विकास चरम सीमा पर हुआ। इनके बारे में थोड़ा-थोड़ा प्रमाण दूंगा क्योंकि पत्रिका के पृष्ठ सीमित हैं। गणित के विषय में भारतीय गणितज्ञों यथा ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी), महावीर (नवीं शताब्दी), भास्कर (बारहवीं शताब्दी), ने ऐसी अनेक खोजें कीं जिनसे पूरा विश्व अपरिचित था। यह बात सर्वमान्य है कि समूचे विश्व को गणित का ज्ञान चाहे अंक गणित हो, चाहे बीजगणित और चाहे ज्यामिति हो, भारत से ही प्राप्त हुआ है।

शून्य का प्रयोग पिंगल ने अपने सूत्र में ईसा से 200 वर्ष पूर्व किया था। ब्रह्मगुप्त प्रथम भारतीय गणितज्ञ थे जिन्होंने शून्य को प्रयोग में लाने के नियम बनाए यथा—

1. शून्य को किसी संख्या में घटाने या जोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़ता;
2. शून्य से किसी संख्या का गुणन फल भी शून्य होता है।
3. किसी संख्या को शून्य से विभाजित करने पर उसका परिणाम अनंत छोटा है।

jk u foKku% भारत में रसायन विज्ञान को प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण माना गया है। संस्कृत भाषा में रसायन विज्ञान के ग्रन्थ उपलब्ध हैं। नागार्जुन ने रसायन विज्ञान पर इस रत्नाकर ग्रंथ की रचना की। इसमें उन्होंने पारे के यौगिक बनाने के अनेक प्रयोग बताए हैं। उन्होंने रसायन विज्ञान में काम आने वाले उपकरणों का भी विवरण दिया। इसके अलावा रसायन शास्त्री वृंद भी हुए हैं। उन्होंने सिद्ध योग नामक ग्रंथ की रचना की।

[kxky foKku% यह विज्ञान भी भारत में ही विकसित हुआ। खगोल शास्त्री आर्यभट्ट ने पृथ्वी के गोल होने और उसके अपनी धुरी पर घूमने की पुष्टि

की। ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त की पुष्टि की। खगोल विज्ञान का उद्भव वेदों से हुआ। इस काल में लोग धर्म प्रवण थे तथा शुभ लग्न देख कर ही काम करते थे। इस काल में 'लगध' ऋषि ने खगोल विज्ञान पर एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम है— 'वेदांग ज्योतिष'।

महाभारत काल में भी ज्योतिष की चर्चा आती है। आर्यभट्ट ने ही बताया था कि चन्द्रमा और पृथ्वी की छाया पड़ने पर ही ग्रहण लगता है। सूर्य ग्रहण अमावस को और चन्द्र ग्रहण पूर्णिमा को लगता है। आर्यभट्ट ने 'आर्यभटीय' और 'आर्य सिद्धान्त' ग्रन्थों की रचना की। आर्य भट्ट के पश्चात् छठी शताब्दी में वराहमिहिर नामक खगोल वैज्ञानिक ने स्पष्ट किया कि संसार में कोई ऐसी शक्ति है जो वस्तुओं को धरातल से बांधे रखती है। वराहमिहिर ने 'वृत्तसंहिता' और 'बृहज्जातक' नामक ग्रन्थों की रचना की।

चिकित्सा विज्ञान हमें अथर्ववेद से प्राप्त हुआ है। अनेक रोगों के उपचार के लिए 'भैषज्य सूत्र' संकलित है। 'चरक संहिता' और 'सन्तुत संहिता' में जल चिकित्सा, सूर्य किरण चिकित्सा एवं मानसिक चिकित्सा विषयों पर वर्णन है। महर्षि अज्ञेय ने नाड़ी और श्वास की गति पर प्रकाश डाला। पतंजलि ने योग से शरीर को स्वस्थ रखने के अनेक उपाय बताए। बाणभट्ट ने 'अष्टांग संग्रह' और 'अष्टांग हृदय संहिता' की रचना की। माधवाकर रोग निदान एवं रोग लक्षणों पर प्रकाश डालने वाले पहले आचार्य माने जाते हैं।

भारत में पशु चिकित्सा विज्ञान भी काफी विकसित हुआ। ऋषि शालिहोत्र ने आयुर्वेद, अश्वलक्षण शास्त्र तथा अश्व प्रशंसा नामक ग्रंथों की हाथी, घोड़ा, गाय, बैलों की चिकित्सा के बारे में ग्रन्थ लिखे। कणाद ऋषि ने यह सिद्ध किया कि प्रत्येक पदार्थ परमाणुओं से मिल कर बना है। उन्होंने परमाणुओं की संरचना, इनकी प्रवृत्ति और इनके प्रकारों पर विस्तार से चर्चा की।

भारत में आधुनिक विज्ञान की परम्परा का विकास ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के पश्चात् हुआ। मेरा यह लेख लिखने का एक ही प्रयोजन है कि देश से बाहर जा रहे कंप्यूटर इंजीनियर, डॉक्टर आदि विदेशों में न जाएं बल्कि अपने वैज्ञानिक ऋषियों को प्रणाम करते हुए यहीं पर देश को सेवाएं प्रदान करें एवं गर्व महसूस करें।



नारी तेरे रूप अनेक

*मीनाक्षी गंभीर

जिंदगी बहुत कशमकश में उलझी हुई हैं। रोजमर्रा की भागती-दौड़ती जिंदगी में और वह भी खासकर जब सिर्फ गृहिणी न होकर उसके साथ-साथ और भी कई जिम्मेदारियाँ हो और रोजमर्रा के जीवन में आने वाली हर छोटी-बड़ी समस्या। जिसे बिना निपटाए वह आगे नहीं बढ़ सकती। यह समय नारी की सबसे कठिन परीक्षा की घड़ी होती है। पहले घर, फिर ऑफिस, बाजार और फिर सामाजिक दायित्व इन सब जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते जब वह थक भी जाती है, तब भी वह उफ तक नहीं करती। हर नारी करीब-करीब इसी तरह की समस्याओं में घिरी होती है। फिर भी उसके मन में कुछ करने की लगन और कुछ नया करने की चाह बनी रहती है और होना भी यही चाहिए क्योंकि अपने आपको ऊर्जावान बनाए रखने के लिए यह सब बहुत जरूरी है।

मशहूर कवियत्री महादेवी वर्मा ने महिला को **कुलु कुलु नकु क धन्यु** बतलाया था, तो राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने दशकों पहले लिखा था, **दुःख तु लो गक | रकुगुह ; गह दकुलु वकुपु** **एगसनुक वकु वकुलु एगकुलु** सदियां बीत गईं, युग बदले, लेकिन महिला की विवशता का दर्द कभी कम नहीं हुआ। कभी न कभी जिंदगी के किसी न किसी मोड़ पर हर महिला के मन में ये सवाल एक न एक बार जरूर आता है, कि क्या महिला होना दुनिया का सबसे बड़ा गुनाह है?

हमारे देश में जब भी महिलाओं की बात चलती है तो सामने दो तरह की तस्वीर उभरकर आती है। एक तस्वीर सबला की जो पढ़ी-लिखी है, साधन-संपन्न है, कमाती है, अपने कार्यक्षेत्र में सफल होने के साथ-साथ नीतियों-निर्णयों में दखल रखती है और जिसे आज की महिला होने का गौरव हासिल है। दूसरी तस्वीर इसके

उलट है। यह तस्वीर उस महिला की है जो अनपढ़ है, साधनहीन है, उसका कार्यक्षेत्र उसका घर है, परिवार है और नीतियों तथा निर्णयों से उसका दूर-दूर तक नाता नहीं। दोनों में एक समानता बस यही है कि दोनों महिला हैं। पता नहीं कब और कैसे नारी को अबला कहा और माना जाने लगा, वह भी उस देश में जहाँ माँ दुर्गा की पूजा की जाती है। माँ दुर्गा- साक्षात् शक्ति का प्रतीक, असंख्य राक्षसों का संहार करने वाली माता दुर्गा सवारी भी करती हैं तो शेर की जो अपने आप में बल और शक्ति की एक मिसाल है। अपने बल, बुद्धि और पराक्रम से माँ भगवती ने अनेकानेक दानवों का विनाश किया। अकेले ही विभिन्न रूप धारण कर उन पर विजय प्राप्त की। यह उनका आत्मबल और आत्म विश्वास ही था, जो निरंतर उनका सहायक बना। नौ दिन तक लगातार महिषासुर से युद्ध करके उस पर जीत हासिल करने वाली, दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मबल से युक्त माता की बेटियां अबला कैसे हो सकती हैं? माँ के गुण तो बच्चे में स्वभाव से ही आ जाते हैं। पर कभी-कभी परिस्थितियाँ इन गुणों को उभरने नहीं देती, पर हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि मन में दृढ़ इच्छा हो, स्वयं पर विश्वास हो तो हर काम संभव हो जाता है।

दुःख तु लो गक | रकुगुह ; गह दकुलु वकुपु की उक्ति वैदिक काल में चरितार्थ हुई थी। नारी की पूजा से देवता प्रसन्न होते हैं, हमारे यहां ऐसा माना जाता है। जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवताओं का वास होता है। इसका अर्थ नारी की आरती उतारना नहीं है अपितु, इसका अर्थ है नारी सुलभ गुणों- यथा उसकी ममता, करुणा, दया और कोमलता का सम्मान करना। उसके इन गुणों को अपने जीवन में एक दैवीय देन के रूप में स्वीकार करना। जो लोग नारी को विषय भोग की वस्तु मानते हैं वो भूल जाते हैं कि नारी सबसे पहले मां है, यदि वह मां के रूप में हमें ना मिलती और हम पर अपने उपरोक्त गुणों की वर्षा ना करती तो क्या होता? हम ना होते और ना ही यह संसार होता। तब

* वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, नई दिल्ली

केवल शून्य होता। उस शून्य को भरने के लिए ईश्वर ने नारी को हमारे लिये सर्वप्रथम मां बनाया। डॉ. राम मनोहर लोहिया के शब्दों में 'P'fä e&lk v&us ij çdV g&rh g&v&çdV g&r&g&rs v&xs c<r&h g& 'fä n&clusij n&crhpyht k&rhg&fd ek&us g&ls gh u&gh&A भारतीय समाज में नारी को इतना दबा कर रखा गया कि उसे अपने क्षमताओं व सामर्थ्य पर विश्वास ही नहीं रहा। संपूर्ण सृष्टि का आधार होते हुए भी नारी पुरुष की तुलना में कमजोर ही साबित की गई है।

आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलायें कार्य नहीं कर रही हैं। अपना काम अच्छी तरह से निभा रही हैं। भारतवर्ष बहुआयामी, बहुधार्मिक, अनेक भाषाओं, विश्वास, मतों और विभिन्न संस्कृतियों एवं संस्कारों तथा विशेष रूप से नारी शक्ति का देश है। हमारे देश में महिलाओं ने बहुत ऊँचे-ऊँचे पदों पर कार्य किया है, चाहे वह सरकारी हो या कॉरपोरेट जगत इनमें श्रीमती प्रतिभा पाटिल, इंदिरा गाँधी, सोनिया गाँधी, मीरा कुमार, सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित, ममता बनर्जी, किरण बेदी, मायावती, जयललिता, चन्दा कोचर, नैना लाल आदि नाम प्रमुख हैं।

'मॉडर्न इंडियन वुमन' (आधुनिक भारतीय नारी), कितनी सार्थकता है इस शब्द में। आधुनिक सोच और भारतीय संस्कृति का समावेश। वो नारी जो सोच से स्वतंत्र पर हृदय से संस्कारों का संगम हो। आधुनिक भारतीय नारी— कुछ लोग जब इस पर सोचते हैं तो सबसे पहला विचार जो उनके मन में आता है वो किसी महानगर की कामकाजी स्त्री या विदेश में रहने या पढ़ने वाली किसी लड़की या महिला का। पर यह विचार कितना सही है? क्या है हमारे लिए 'मॉडर्न इंडियन वुमन' की परिभाषा। क्या इस नाम से हम उस वुमन को जोड़ते हैं जो किसी महानगर में किसी इंटरनेशनल कंपनी में काम करती है या जो विदेश में रहती है या हमारे अभिनेत्रियां, ऐसा क्यों है? शायद आधुनिक भारतीय नारी की सही परिभाषा खुले विचारों वाली, मन से स्वतंत्र उस नारी की कल्पना है जो कहीं भी रहती हो, कुछ भी करती हो, पर उसकी सोच आधुनिक हो और मन में परम्पराओं के लिए सम्मान हो और जो परिवर्तन

को सहज ही स्वीकार करती हो। जो महिला आधुनिक कपड़े पहनती हो, या किसी महानगरीय सभ्यता से हो, उसे आधुनिक तो मान सकते हैं पर आधुनिक भारतीय नारी तब तक नहीं मान सकते जब तक उसमें हमारे संस्कारों और संस्कृति का समावेश न हो। परन्तु एक महिला जो गाँव में रहती हो, घरेलू हो पर मन से खुले विचारों वाली हो, जागरूक हो, पूरे मन से नए विचारों को और नई सोच को स्वीकार करने वाली हो तथा अपनी परम्पराओं का निर्वहन करती हो, वो है हमारी आधुनिक भारतीय नारी का एक रूप। क्योंकि 'आधुनिक भारतीय नारी' नाम से ही स्पष्ट है—

v&lfudr&l kp e& H&jrh r&k&O og&j ea

जिस नारी में ये दोनों गुण हैं, वही है आज की आधुनिक भारतीय नारी।

फिर वो कहीं से भी हो, किसी अंतरराष्ट्रीय कंपनी की अधिकारी हो, विदेश में रहने वाली भारतीय नारी हो, एक छोटे शहर की कामकाजी महिला हो या फिर किसी कसबे की घरेलू स्त्री। हम खुद को आधुनिक कहने लगे हैं, लेकिन सच यह है कि मॉर्डनाइजेशन सिर्फ हमारे पहनावे में आया है, लेकिन विचारों से हमारा समाज आज भी पिछड़ा हुआ है। आज महिलाएं एक कुशल गृहणी से लेकर एक सफल व्यवसायी की भूमिका बेहतर तरीके से निभा रही हैं। नई पीढ़ी की महिलाएं



तो स्वयं को पुरुषों से बेहतर साबित करने का एक भी मौका गंवाना नहीं चाहती। दुर्भाग्य की बात है कि नारी सशक्तिकरण की बातें और योजनाएं केवल शहरों तक ही सिमटकर रह गई हैं। एक ओर बड़े शहरों और मेट्रो सिटी में रहने वाली महिलाएं शिक्षित, आर्थिक रूप से स्वतंत्र, नई सोच वाली, ऊंचे पदों पर काम करने वाली महिलाएं हैं, जो पुरुषों के अत्याचारों को किसी भी रूप में सहन नहीं करना चाहती। वहीं दूसरी तरफ गांवों में रहने वाली महिलाएं हैं जो ना तो अपने अधिकारों को जानती हैं और ना ही उन्हें अपनाती हैं। वे अत्याचारों और सामाजिक बंधनों की इतनी आदी हो चुकी हैं कि अब उन्हें वहां से निकलने में डर लगता है। वे उसी को अपनी नियति समझकर बैठ गई हैं। लेकिन गांव और शहर की इस दूरी को मिटाना जरूरी है।

आरक्षण से ज्यादा जरूरी है, महिला की स्थिति को सशक्त बनाना और उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सबल बनाना जिससे उनमें आत्मविश्वास आये और वे अपने हक की लड़ाई बिना किसी के सहयोग के खुद लड़ सकें। महिलाओं की शिक्षा, सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। हमें दूरस्थ गांवों में रहने वाली महिलाओं के जीवन स्तर पर भी ध्यान देना होगा। शिक्षा से आज भी ग्रामीण अंचल में नारी 90 प्रतिशत तक अछूती है। उसे शिक्षित करना देश को विकास के रास्ते पर डालना है। इससे नारी वर्तमान के साथ जुड़ेगी। यह तभी संभव है जब महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति चेतना हो और उनमें स्वाभिमान की भावना जाग्रत हो। जब महिलाएं अपने होने को समझेंगी, तब वास्तव में अपने होने की पैरवी कर सकेंगी। यहाँ एक चुटकुला याद आ रहा है—

पति ने पत्नी से कहा—

^<ksy] xøkj] 'kə] i 'h] ukjh
; s l c r kM̄ ds vf/kdkj]r*

इसका अर्थ समझती हो या समझाऊँ।

पत्नी ने जवाब दिया—

^bl dk vFlZrks fcydy gh l kQ g\$
bl ea, d t xg e\$g]vplj t xg vki g\$A

खैर, यह तो व्यंग्य था बाकी तो पति—पत्नी या स्त्री—पुरुष, जो भी कहें दोनों के जीवन की सफलताओं पर, असफलताओं पर, अच्छे पर, बुरे पर समान अधिकार हैं। ये दोनों एक—दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है।

अंततः हमें मानसिकता में बदलाव लाते हुए तुलसीदास की उस उक्ति से बाहर निकलना होगा जिसमें उन्होंने नारी को प्रताड़ना की वस्तु बताते हुए लिखा है P<ksy] xøkj] 'kə] i 'h] ukjh ; s l c] r kM̄ ds vf/kdkj]r*^A अगर हमारे समाज में महिलायें खुशहाल होंगी तभी देश सफलता के मोती चुनते हुए विकास के पथ पर प्रशस्त होगा, क्योंकि प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु ने कहा है कि ^L=h dh mlūfr ; k voufr ij gh j kV^a dh mlūfr fuH] g\$*

^vc ughagSvcyk ukj] vc ughagSçplj]h
l oZqk l E l ū gSukj] vc l oZk̄äeku gSukj]AA*

इस उम्मीद के साथ कि आने वाला पल नारी के लिए निर्भय और स्वच्छन्द वातावरण का निर्माण करेगा, जहाँ आधुनिकता के परिवेश में वैचारिक समानता होगी। नारी के प्रति सोच में सम्मान होगा और सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पंत की पंक्तियाँ साकार होंगी :

^eā] d]ks ukj]h dks ekuo]
fpj oflūuh ukj]h dks
; & ; & dh fueZ dkj k l \$
t uuh l f[k I; kj h dksAA*

- ❖ जीवन की कला को अपने हाथों से साकार कर नारी ने सभ्यता और संस्कृति का रूप निखारा है, नारी का अस्तित्व ही सुन्दर जीवन का आधार है।
- ❖ स्त्री की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति निर्भर है।



वर्षा ऋतु में ध्यान देने योग्य बातें



*शशि/बाला

अभी कुछ दिन पहले की बात है जब मैं ऑफिस से घर पहुँची तो मैंने देखा कि मेरे पड़ोसी मिस्टर शर्मा अपने बेटे रोहन को हॉस्पिटल लेकर जा रहे थे। मैंने मिसिज शर्मा से पूछा कि रोहन को क्या हुआ, तो उन्होंने बताया कि परसों रोहन बारिश में बहुत भीग गया था जिससे उसकी तबीयत खराब थी, लेकिन आज उसके पेट में असहनीय दर्द है इसीलिए उसे हॉस्पिटल लेकर जा रहे हैं। यह एक ऐसी घटना है जो आजकल हमारे आस-पास दिख ही पड़ती है क्योंकि यह मौसम ही ऐसा है जिसमें बच्चे, बूढ़े क्या हम जैसे युवा भी प्रभावित हो सकते हैं और ज्यादातर होते भी हैं।

बरसात का मौसम गर्मी से राहत दिलाने वाला तो है ही, साथ-साथ हमारे किसानों के लिए एक सुखद एहसास है जिससे उनके खेतों की प्यास बुझती है और वे लहलहा उठते हैं। जब तपती धरती पर बारिश की रिमझिम बौछारें पड़ती हैं तो सभी को तरों-ताजा कर देती हैं। वैसे तो वर्षा ऋतु एक खुशनुमा एहसास है, पर आजकल शहरों में बारिश के पानी की सही तरीके से निकासी न होने के कारण जगह-जगह पानी भर जाता है जिससे रुके हुए पानी में मच्छर पैदा होते हैं और कई तरह की बीमारियाँ फैलाते हैं, जैसे- मलेरिया, डेंगू, सर्दी-जुकाम, टाइफाइड, त्वचा रोग, पीलिया, पेट दर्द इत्यादि। बरसात के मौसम में होने वाली बीमारियों से कुछ सावधानियाँ बरतते हुए बचा जा सकता है जो नीचे दी जा रही हैं-

D; k dj&

1. इन दिनों में हल्का सुपाच्य भोजन लें।
2. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए उचित मात्रा में संतुलित व पौष्टिक आहार लें। इससे शरीर में स्फूर्ति व शक्ति बनी रहती है।
3. चने, मसूर की दाल, लहसुन, प्याज, आँवले व कम वसायुक्त भोजन का सेवन ऐसे मौसम में उपयुक्त है।
4. ढीले व हल्के कपड़े पहनें।
5. फलों व सब्जियों को गर्म पानी में धोकर खाएं।
6. पानी उबालकर व फिल्टर किया हुआ पीएं क्योंकि दूषित पानी से कालरा, हेपेटाइटिस, डायरिया और टाइफाइड जैसी बिमारियाँ होती हैं।

* हिंदी अनुवादक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

7. बहुत आवश्यक होने पर ही बरसात में बाहर निकलें और छाता व रेनकोट ले जाना न भूलें।
8. बच्चों को पार्कों व तालाब के पानी में मस्ती न करने दें। ऐसे में न चाहते हुए भी गंदा पानी नाक, कान व मुँह में जाने की संभावना बनी रहती है।
9. खाने-पीने की सभी वस्तुओं को ढक कर रखें व सभी वस्तुओं को मक्खियों व किटाणुओं से बचाएं।
10. बिस्तरों व पहनने के कपड़ों में नमी आने पर उन्हें धूप अवश्य लगाएं।

D; k u dj&

1. बरसात में ज्यादा देर तक न भीगें। भीगने पर जितना जल्दी हो सके साफ पानी से नहाकर अपने शरीर को सुखाएं।
2. आस-पास गंदा पानी इकट्ठा न होने दें।
3. कटे-फटे फल बिल्कुल न खाएं।
4. स्ट्रीट फूड व फास्ट फूड से बचें।
5. बाहर का पानी न पीएं।
6. घाव को मक्खियों व किटाणुओं से बचाएं व नोचें नहीं अन्यथा यह संक्रमित होकर ज्यादा फैलेगा।
7. बारिश में नंगे पैर न चलें।
8. ज्यादा तला हुआ खाना न खाएं।

बदलते मौसम में बुजुर्गों के बीमार होने की संभावना ज्यादा होती है। इसलिए जरूरी है कि वे बरसात के मौसम में ज्यादा बाहर न निकलें व गरम चाय-कॉफी व सूप पीएं। घर के आसपास पानी जमा न होने दें व गड़गड़ों को भरवा दें। घर की फिनाइल से सफाई करें ताकि मक्खियाँ न आएँ। किसी रोग की शंका होने पर तुरंत डॉक्टर को दिखाएं।

आशा है कि उपरोक्त सावधानियों से आप स्वयं को व अपनों को इस बरसात में होने वाली बीमारियों से बचाते हुए इसका आनन्द लेंगे क्योंकि वर्षा ऋतु है ही इतनी मनभावन जिसमें बच्चे, बूढ़े, जवान सभी इसकी बूंदों में भीगने से अपने आपको रोक नहीं पाते हैं।

आयेगा लौट कर फिर वो सूरज...

*स्नेहा मिश्रा

आयेगा लौट कर फिर वो सूरज...
हौसलों की नोक पर खड़ी हूँ मैं
देखती विश्व शिखर को...
ऊँची उसकी शान है,
मेरे सपनों में भी अभिमान है।

अपनी रोशनी को समेटे चल रहा
गगन में वो सूर्य का निशान है।
ढल रहा वो सूर्य, ढल रही वो शाम है।
अंधेरे में रह गये क्षितिज की भी क्या बात है।
सीमित रहे अंधेरे में वो मेरे मंजिल के निशान हैं।

पर बढ़ चले कदमों को रोकूँ मैं क्यों?
शब्दों में संवर रहे मेरे ख्याल हैं।
बन रही उनकी राह— जिनके हौसलों में जान है।
राह पर पड़ी उम्मीदों की बौछार है।

क्षितिज पार ज़िन्दा हैं मेरे मंजिल के निशान
आयेगा लौटकर फिर वो सूरज...
बस उसकी रोशनी का मुझे इंतज़ार है।
हौसलों की नोक पर खड़ी हूँ मैं,
देखती विश्व शिखर को...

* पुत्री श्री जय प्रकाश मिश्रा, कंप्यूटर ऑपरेटर (अनुबंध पर), निगमित कार्यालय

तनाव मुक्त जीवन

*देवराज सिंह 'देव'

तनाव से जिंदगी को, बोझिल न करो यारो।
कुछ हँस लो कुछ गा लो, बस जिंदगी संभालो यारो।

जीवन तो अनमोल है, फिर भी,
लोग पीते ज़हर घोल हैं।
तनाव और चिन्ताओं से, अब जिंदगी संवारो यारो।
मांसपेशियों में दर्द और, संक्रमण न उतारो यारो।
लीवर, किडनी में रक्तचाप,
हैविट डिसऑर्डर न बढ़ाओ यारो।

ये लाईलाज बीमारियाँ हैं, इनसे जिंदगी उबारो यारो।
तनाव व थकान से, प्रभावित होती हैं ग्रंथियाँ
जिनसे पनपते हैं नये-नये रोग, इसलिए, इन रोगों से,
अब मुक्ति पा लो यारो।

जीवन यूँ ही चला जाएगा, सब कुछ यहीं रह जाएगा।
इसलिए इस जिंदगी को, मुश्किल में न डालो यारो।

कर्म ही प्रधान है, ये जानता जहान है।
काम दबाव भूलकर, कुछ पल मस्ती में गुजारो यारो।

बिना खुशी के ये जीवन, अभिशाप बन जाएगा।
मानो सदियों का कमाया पुण्य, पाप बन जाएगा।

ये जीवन फिर दुर्लभ है, इसे खुशहाल बनाओ यारो।
समय से खाना और सोना, अच्छा बता गए महापुरुष।
उनकी सद्वाणी से, कुछ गुणवत्ता सुधारो यारो।

पैसा एक साधन है, भूख-प्यास का राशन है।
पैसा ही सब कुछ नहीं, पैसे को खुदा न बनाओ यारो।

'देव' समय तो गुजर गया, हर दौर से उबर गया।
तभी तो कहता है कि जिंदगी संवारो यारो।

* भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी, केंद्रीय भण्डारण निगम, गाजियाबाद-प्रथम

उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 08.06.2015 को आयोजित बैठक की झलकियां

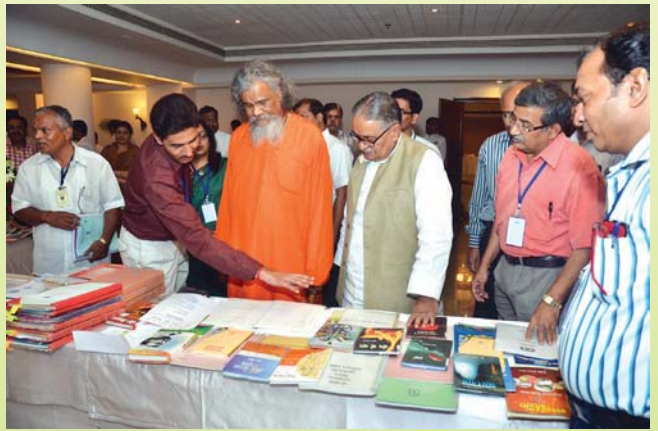


माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री के बेंगलुरु में दौरे के दौरान कर्नाटक के मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में दिनांक 18.06.2015 को आयोजित बैठक के अवसर पर उपस्थित निगम के प्रबंध निदेशक एवं क्षेत्रीय प्रबंधक, बेंगलुरु



संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद तथा सेंट्रल वेअरहाउस, चिकलथाना, औरंगाबाद का राजभाषा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 9.04.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद तथा दिनांक 24.06.2015 को सेंट्रल वेअरहाउस, चिकलथाना, औरंगाबाद का राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) ने समिति के संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी तथा अन्य गणमान्य सांसदों का बुके से स्वागत किया। माननीय समिति ने निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद तथा सेंट्रल वेअरहाउस, चिकलथाना, औरंगाबाद में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए राजभाषा की प्रगति के संबंध में अपने बहुमूल्य सुझाव भी दिए। इस अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की।



निगमित कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ



क्षेत्रीय कार्यालयों में अप्रैल-जून 2015 में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ



क्षेत्रीय कार्यालयों में अप्रैल-जून 2015 में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियां



अंतरात्मा की आवाज़

*दिव्य खत्री

मैं... सफर हूँ
एहसास हूँ तेरे लिए
मैं... शब्द भी
सपनों में कुछ लफ़्ज़ लिए
उम्मीद की कहानियाँ..
तेरे जिस्म की रूह तब
हौले-हौले चल ज़रा
हौसले को बुलन्द कर
सवालों से घिरे वो पल
वक्त कर सके ढयान
बारीकियाँ तेरे दिल की कुछ
पल सिमट जाए जहाँ
मैं वक्त हूँ, शब्द भी
सफर के वो पल भी
सवालों से घिरे तो क्या
नज़र मिला के मिल ज़रा

मैं... फर्ज़ हूँ
मैं फर्ज़ हूँ ज़रा रुक तो जा
ध्यान में मुझको तू ला
रास्ते तूफ़ान भरे
मुझको तू न आजमा
वो कश्तियाँ ठहर गईं
यात्री बस खो गए
उम्मीदें फिसल गईं
ज़िंदगी भी हुई धुँआ
मैं हूँ...
सफ़र भी हूँ, शब्द भी हूँ
वक्त और फ़र्ज़ भी हूँ
जिसको अपनी कदर नहीं
उसके लिए, मैं सबक भी हूँ

* सुपुत्र श्रीमती संगीता खत्री, वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

माँ की ममता

*धर्मेन्द्र पचौरी



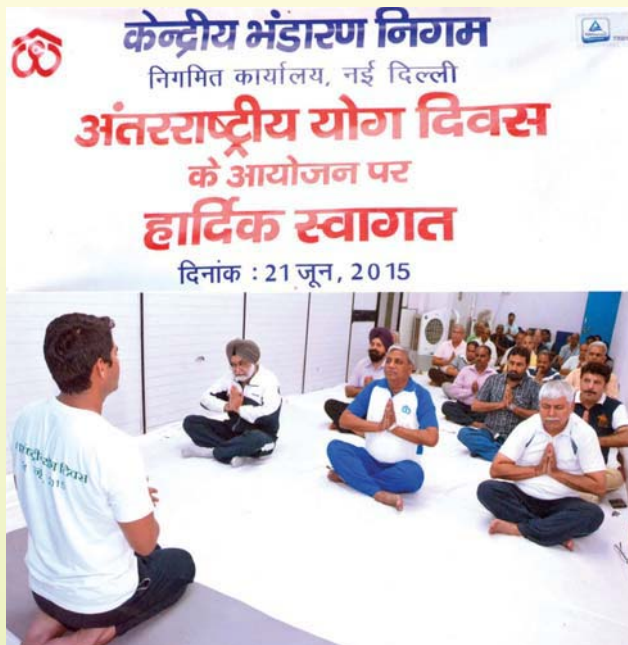
मैं और वो जो हमेशा मेरे पास रहती हैं
मेरी हर बात सुनती और सहती हैं
उसे न कोई गिला और न शिकायत रहती है
पता नहीं क्यों वो हर बात चुप रहकर कहती है
भूल नहीं पाता हूँ उसे जब वह मुझसे दूर रहती है
यहाँ तक कि घर पर भी उसकी याद मेरे साथ रहती है
उसकी यही बात मुझसे हर वक्त कहती है
कि मैं तेरे साथ हूँ तू क्यों मुझसे दूर रहती है
मैंने उसके अन्दर एक अलग छवि देखी है
जो चुप रहकर मुझसे सारी बात कहती है
मैं और वो जो हमेशा मेरे पास रहती हैं।

* कनिष्ठ तकनीकी सहायक, केन्द्रीय भंडारगृह, मुरैना-।



निगमित कार्यालय में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस, बैडमिंटन एवं क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

*राजीव विनायक



छात्रवृत्तियों का उद्देश्य प्रतिभावान खिलाड़ियों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करना है। छात्रवृत्तियाँ पाने वाले 27 खिलाड़ियों में 8 महिलाएं हैं। जिन खिलाड़ियों द्वारा इस तिमाही के दौरान जो उपलब्धियाँ हासिल की गई हैं उनका विवरण इस प्रकार है—

vUrjkkVh ; lx fnol

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को निगमित कार्यालय में मनाया गया। इस अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह, निदेशक (वित्त) श्री बी.आर. गुप्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल एवं निगम के वरिष्ठ अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

[ky xfrfofek k

केन्द्रीय भंडारण निगम अपने मुख्य व्यवसाय वैज्ञानिक भंडारण की विभिन्न गतिविधियों के साथ खेलों को प्रोत्साहन देने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए खिलाड़ियों को छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान की जाती हैं। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी निगम ने क्रिकेट, बैडमिन्टन, टेबल टेनिस के 27 खिलाड़ियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की हैं। इस

Vcy Vful & श्री शिवम बंगा ने जूनियर बॉयज कोकस्टोन स्टेट रैंकिंग टूर्नामेंट जीता। वे यूथ बॉयज में अवतार कौर मैमोरियल स्टेट रैंकिंग टूर्नामेंट में उपविजेता भी रहे। इसी प्रकार गर्ल्स सिंगल्स में कोकस्टोन टूर्नामेंट में सुश्री सृष्टि गुप्ता उपविजेता रहीं तथा अवतार कौर मैमोरियल स्टेट रैंकिंग टूर्नामेंट में सुश्री कृतिका मलिक उपविजेता रहीं।

cMeVu& श्री शुभम गुसाई ने कोच्चि में खेले गए आल इंडिया बैडमिंट रैंकिंग टूर्नामेंट के मैन ड्रा में भाग लिया।

fØdV& केन्द्रीय भंडारण निगम की क्रिकेट टीम ने दिल्ली डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन लीग टूर्नामेंट में तृतीय स्थान प्राप्त किया। निगम की टीम ने हाट वैदर क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई भी किया। इसके अतिरिक्त डीडीसीए के टी-20 टूर्नामेंट्स में 4 में से 3 मैच जीते गए। इस टूर्नामेंट में श्री शाकिब आलम, अमित बेरु, यश शर्मा और खाण्डविल का बेहतरीन प्रदर्शन रहा।



* खेल सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन

fnukd	{lerk ½yk k Vukae½	{lerk mi ; kx	i fr' krrk
01.05.2014	105.16	85.52	81
01.05.2015*	115.76	96.80	84
01.06.2014	105.34	87.87	83
01.06.2015	118.00	100.41	85
01.07.2014	104.85	87.23	83
01.06.2015*	117.88	100.31	85
01.07.2015*	117.71	99.52	85

*(अनंतिम)

अप्रैल से जून, 2015 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

Øe- l a	dk Øe dk 'k'kZl	dk Øe vofek
1.	वेअरहाउसिंग सेवाओं का विपणन	08-10 अप्रैल, 2015
2.	भंडारण पैस्ट प्रबंधन एवं प्रधूमन पर लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम	15-29 अप्रैल, 2015
3.	परियोजना मूल्यांकन/परियोजना प्रबंधन	06-08 मई, 2015
4.	154वां अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम	11-21 मई, 2015
5.	आंतरिक लेखा परीक्षा एवं आंतरिक नियंत्रण प्रबंधन पर कार्यक्रम	25-26 मई, 2015
6.	औद्योगिक संबंध और श्रम कानून	28-29 मई, 2015
7.	भंडारण पैस्ट प्रबंधन एवं प्रधूमन पर लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम	10-24 जून, 2015
8.	आईओ/पीओ के लिए इंटरैक्टिव सत्र	26 जून, 2015
9.	एससी/एसटी/ओबीसी/विकलांग कर्मिकों के लिए आरक्षण नीति	29-30 जून, 2015

विशेष कार्यक्रम

Øe- l a	dk Øe dk 'k'kZl	dk Øe vofek
1.	बोर्ड स्ट्रैटिजिक बैठक	26 मई, 2015
2.	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस	21 जून, 2015

सेवानिवृत्ति के अवसर पर निगम परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।

1/2015/01/वि/2015/1/30/त/2015/र/1/0/कु/0/क/वि/क/द/क/ह/2, 0/अ/द/0/क/ह/2

क्र.सं.	नाम	पद	स्थान	जिला
1.	राम कुमार श्योकन्द	कनि. अधीक्षक	नरवाणा	पंचकुला
2.	लक्षमन सिंह	कनि. अधीक्षक	अजीतवाल	चंडीगढ़
3.	राकेश कुमार	कनि. अधीक्षक	कीर्ति नगर	दिल्ली
4.	श्रीमती टी एम जमुना	कनि. अधीक्षक	तौलगेट	चेन्नई
5.	एम के सामन्ता	कनि. अधीक्षक	क्षे.का. कोलकाता	कोलकाता
6.	वी पुल्लैय्या	कनि. अधीक्षक	मच्छलीपट्टनम	हैदराबाद
7.	आर के मूर्ति	व.स.प्र. (लेखा)	निर्माण सैल, चेन्नई	चेन्नई
8.	शुभवन्त किशोर	भं. एवं नि. अधिकारी	नरसिंघपुर	भोपाल
9.	श्रीमती वार्ड वी आर मनिकम्मा	अधीक्षक	सीएफएस कुकुटपल्ली	हैदराबाद
10.	डी बी रंगा	अधीक्षक	नजफगढ़	दिल्ली
11.	सी एच वी रामाना राव	अधीक्षक	सीएफएस, व्हाइट फील्ड	बेंगलुरु
12.	एम वी रामाना राव	अधीक्षक	सीएफएस, इम्पैक्ट पार्क	नवी मुम्बई
13.	राम सिंह यादव	वे.स.-।	आरडब्ल्यूसी, आलम नगर	लखनऊ
14.	पी मल्लिकार्जुन राव	वे.स.-।	निदमानुर	हैदराबाद
15.	सुभाष चन्द्र	वे.स.-।	करनाल-।।।	पंचकुला
16.	लक्ष्मी कान्त नस्कर	वे.स.-।	आई एण्ड ई, कोलकाता	कोलकाता
17.	अरविन्द चक्रवर्ती	वे.स.-।	टीटी पेट्रापोल	कोलकाता
18.	निरंजन गोयल	वे.स.-।	नि.का., क्रय विभाग	निगमित कार्यालय
19.	एस कृष्ण मूर्ति	वे.स.-।	टीपी गुडम	हैदराबाद
20.	विद्युत कुमार नाथ	लेखाकार	सीएफएस, कोलकाता	कोलकाता
21.	वी बालासुन्दरम	लेखाकार	क्षे.का., चेन्नई	चेन्नई
22.	पी एन गर्ग	स.म.प्र. (लेखा)	नि.का., वित्त विभाग	निगमित कार्यालय
23.	टी के धारा	स.प्र. (सा.)	क्षे.का., भुवनेश्वर	भुवनेश्वर
24.	जगदम्बा प्रसाद तिवारी	कनि. अधीक्षक	क्षे.का., लखनऊ	लखनऊ
25.	मांगेराम लेल्लर	कनि. अधीक्षक	लाडवा	पंचकुला
26.	वी के सिन्हा	कनि. अधीक्षक	क्षे.का., पटना	पटना
27.	एस जगदीशन	कनि. अधीक्षक	क्षे.का., चेन्नई	चेन्नई
28.	एस वी राउत	कनि. अधीक्षक	वाशी	मुंबई
29.	ए धायालासीलन	कनि. अधीक्षक	क्षे.का., चैन्नई	चेन्नई
30.	मोहमद घोस	कनि. अधीक्षक	गडवाल	हैदराबाद
31.	एन के वर्मा	कनि. अधीक्षक	इंदौर-।	भोपाल
32.	एस के श्रीवास्तव	भं. एवं नि. अधि.	पिपवाव	अहमदाबाद

क्र.सं.	नाम	पद	स्थान	जिला
33.	जी थिरुमुलान	भं. एवं नि. अधि.	क्रोमपेट	चेन्नई
34.	आई रमेश	भं. एवं नि. अधि.	सीएसएफ, हवाईटफील्ड	बंगलुरु
35.	श्रीमती ए कारकेटा	भं. एवं नि. अधि.	क्षे.का., पटना	पटना
36.	एम एस विजय मोहन	भं. एवं नि. अधि.	त्रिवेन्द्रम	कोची
37.	पी जहीर खान	भं. एवं नि. अधि.	क्षे.का., बंगलुरु	बंगलुरु
38.	एम आर मोदिया	भं. एवं नि. अधि.	भावनगर	अहमदाबाद
39.	विजय प्रभात	भं. एवं नि. अधि.	नि.का., गुणवत्ता आश्वासन विभाग	निगमित कार्यालय
40.	सतीश कुमार जोशी	अधीक्षक	खरसिआ	रायपुर
41.	जगदीश राय	अधीक्षक	हनुमानगढ़- II	जयपुर
42.	ए अन्जी रेड्डी	अधीक्षक	हवाईटफील्ड- I	बंगलुरु
43.	वाई सदाशिव राव	अधीक्षक	क्षे.का., हैदराबाद	हैदराबाद
44.	श्रीमती वीना रानी पांडे	अधीक्षक	गोरखपुर	लखनऊ
45.	बी वीरलाह	अधीक्षक	सीएफएस, डी नोड	नवी मुंबई
46.	श्रीमती आर पी खिलनानी	अधीक्षक	क्षे.का., मुंबई	मुंबई
47.	बरनाबास एक्का	अधीक्षक	पिपवाव	अहमदाबाद
48.	हंस राज कोहली	अधीक्षक	नि.का., कार्मिक विभाग	नि. कार्यालय
49.	तपन ज्योति बनर्जी	वे.स.- I	पंचपाड़ा	कोलकाता
50.	एस एन दुले	वे.स.- I	सीके रोड	कोलकाता
51.	अमर सिंह	वे.स.- I	भिवानी	पंचकुला
52.	सुकुमार शाह	लेखाकार	क्षे.का., गुवाहाटी	गुवाहाटी
53.	एम आर शर्मा	स. अभियंता (सी.)	सै.वे., करनाल- III	पंचकुला
54.	एस एस वेंकटेश्वर राव	स. अभियंता (सी.)	एस्का	चेन्नई
55.	के नागेस्वरा राव	स.म.प्र. (सा.)	क्षे.का., हैदराबाद	हैदराबाद
56.	पी भूपथि	स.प्र. (लेखा)	क्षे.का., चेन्नई	चेन्नई
57.	वी मनमधा राव	स.प्र. (लेखा)	एन.एच.ए.आई में प्रतिनियुक्ति पर	कोलकाता
58.	दीना नाथ दास	स.प्र. (लेखा)	निर्माण सैल, कोलकाता	कोलकाता
59.	जे के रॉय चौधरी	आर्किटेक्ट सहायक	निर्माण सैल, कोलकाता	कोलकाता
60.	शिव कान्त	विद्युत मिस्त्री	नि.का.	निर्माण सैल दिल्ली
61.	रमेश चन्द	अधि. अभियंता (सी.)	निर्माण सैल, दिल्ली	दिल्ली
62.	पी. ई. प्रसाद	म.प्र. (सा.)	क्षे.का., हैदराबाद	हैदराबाद
63.	ओ. पी. भारती	म.प्र. (सा.)	नि.का., निरीक्षण विभाग	निगमित कार्यालय
64.	आर. वी. परमार	कनि. अधीक्षक	आनन्द	अहमदाबाद
65.	एम शिव कुमार	कनि. अधीक्षक	क्षे.का., हैदराबाद	हैदराबाद
66.	के योगेश राई	कनि. अधीक्षक	देवांगिरि	बंगलुरु
67.	श्रीमती के वेलंगानी	कनि. अधीक्षक	निदमानुर	हैदराबाद
68.	कैलाश नारायण	कनि. अधीक्षक	शाहगंज	लखनऊ

Ø- l a uke	i n uke	rSikrh LFku	{k-
69. एम डी मानिकपुरी	कनि. अधीक्षक	बिलासपुर- ।।	रायपुर
70. सी रंगिह	कनि. अधीक्षक	क्षे.का., चेन्नई	चेन्नई
71. बुद्ध राम	कनि. अधीक्षक	मउनाथ भंजन	लखनऊ
72. डी एन असोलकर	कनि. अधीक्षक	खामगांव	मुंबई
73. के वीराइह	कनि. अधीक्षक	रयानापाडू	हैदराबाद
74. एम एस कठारिया	कनि. अधीक्षक	ओखला- ।	दिल्ली
75. लीला नन्द	कनि. अधीक्षक	मुजफ्फरनगर बेस डिपो	लखनऊ
76. पी नारायणा मूर्थि	कनि. अधीक्षक	काकीनाडा	हैदराबाद
77. आर के नयाल	स.म.प्र. (सा.)	आईसीडी, दशरथ	अहमदाबाद
78. आर सुबरायन	व.स.प्र. (सा.)	सीएफएस, माधवाराम	चेन्नई
79. महाबाला पुजारी	परिचालक अधी. अभि.	क्षे.का., बेंगलुरु	बेंगलुरु
80. आर एन सिंह	भं. एवं नि. अधि.	क्षे.का., लखनऊ	लखनऊ
81. ए कृष्णा मूर्थि	भं. एवं नि. अधि.	सीएफएस, वी बक्कम	चेन्नई
82. डी राजशेखरन	भं. एवं नि. अधि.	सीएफएस, माधवाराम	चेन्नई
83. एन सी शेखर	भं. एवं नि. अधि.	सीएफएस, व्हाइटफील्ड	बेंगलुरु
84. राज बली सिंह	भं. एवं नि. अधि.	सतना	भोपाल
85. श्रीमती शीला धारा	अधीक्षक	क्षे.का., भुवनेश्वर	भुवनेश्वर
86. डी के पगारे	अधीक्षक	इन्दौर- ।।।	भोपाल
87. हरि चन्द	अधीक्षक	वित्त विभाग, नि. कार्यालय	निगमित कार्यालय
88. टी श्रीनिवास राव	अधीक्षक	बिदर	बेंगलुरु
89. अरुण सक्सेना	अधीक्षक	क्षे.का., भोपाल	भोपाल
90. एस दामोदरन	अधीक्षक	कालामंडपम	चेन्नई
91. श्रीमती कमल जीत कौर	अधीक्षक	आर पी बाग	दिल्ली
92. शैलेन्द्र पाल सिंह	अधीक्षक	क्षे.का., दिल्ली	दिल्ली
93. सुरेश एम चिंचोली	अधीक्षक	गुलवर्ग- ।	बेंगलुरु
94. डी के सलीम	अधीक्षक	क्षे.का., बेंगलुरु	बेंगलुरु
95. के राजेन्द्र प्रसाद	अधीक्षक	वारंगल	हैदराबाद
96. जे सोलोमन	वे.स.- ।	करीमनगर- ।।	हैदराबाद
97. बी के परमार	वे.स.- ।	क्षे.का., अहमदाबाद	अहमदाबाद
98. वाई डोन्गाइह	वे.स.- ।	राजमुंदरी	हैदराबाद
99. ए बी चावन	वे.स.- ।	क्षे.का., नवी मुंबई	नवी मुंबई
100. सोमबीर सिंह	वे.स.- ।	ग्रेटर नोएडा	दिल्ली
101. श्रीमती सी टी सांथी	वे.स.- ।	काकानाड	कोयम्बटूर
102. एम पी सिंह	वे.स.- ।	सतना	भोपाल
103. छत्तर एस प्रजापति	वे.स.- ।	खाण्डवा- ।।	भोपाल
104. पी एच गणेश राव	वे.स.- ।	देवनगिरी	बेंगलुरु

राजभाषा नीति के संबंध में महत्वपूर्ण दिशानिर्देशों का सारांश

केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर कई परिपत्र/संसूचनाएं जारी की गयी हैं। ऐसे प्राप्त महत्वपूर्ण अनुदेशों का सारांश निम्नवत् है :-

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन: राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश*, नियम, अधिसूचनाएं, करार, प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट या प्रेस विज्ञापितियां अनिवार्य रूप से द्विभाषी जारी किए जाने चाहिए। किसी भी उल्लंघन के लिए ऐसे दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

(* सामान्य आदेश की परिभाषा संस्थाओं द्वारा जारी स्थायी प्रकार के सभी आदेश, निर्णय, अनुदेश, परिपत्र, जो कार्यालयीन प्रयोग के लिए हों तथा ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, परिपत्र आदि जो कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में या उनके लिए हों, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अधीन सामान्य आदेश कहलाते हैं।)

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 का अनुपालन: हिन्दी में प्राप्त पत्र आदि के उत्तर चाहे वे किसी भी क्षेत्र से हों और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से प्राप्त हों, हिन्दी में दिए जाएं।

लेखन सामग्री मर्दें, रबड़ की मोहरें और फार्म आदि का द्विभाषीकरण: सभी मंत्रालयों/विभागों, जिसमें विदेश स्थित भारतीय कार्यालय भी शामिल हैं, से संबंधित लेख सामग्री मर्दें, फॉर्म, मैनुअल, प्रतिक्रियात्मक साहित्य, पत्र शीर्ष, लिफाफे, रजिस्ट्रों के नाम एवं शीर्ष, रबड़ मोहरें, निमंत्रण पत्र, विजिटिंग कार्ड, पहचान पत्र आदि अनिवार्य रूप से हिन्दी तथा अंग्रेजी में बनायी जाएं।

रबड़ मोहरों के संबंध में हिन्दी अक्षरों का आकार अंग्रेजी अक्षरों के समान या उनसे बड़ा होना चाहिए।

साइन बोर्ड, सूचना पट आदि का द्विभाषी/त्रिभाषी में प्रदर्शन करना: 'क' क्षेत्र में साइन बोर्ड, काउंटर बोर्ड, सूचना इत्यादि को हिन्दी और अंग्रेजी में प्रदर्शित किया जाना चाहिए। 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में सभी बोर्ड त्रिभाषिक रूप में अर्थात् क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी और अंग्रेजी में प्रदर्शित किए जाने चाहिए और तीनों भाषाओं के अक्षरों का आकार समान होना चाहिए।

वाहनों पर नाम: वाहनों पर कार्यालयों के नाम अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखवाए जाएं। हिन्दी के नाम ऊपर हो और अंग्रेजी में नीचे।

